[प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर]

स्पष्टीकरण सरकार के स्टेटमैंट पर है, महाजन जी पर नहीं है। इसकी चर्चा आप सदन के बाहर करें।

श्री मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: तो होम मिनिस्टर साहब से मेरा यह कहना है कि जो नारे यहां लगे हैं कश्मीर के सिलसिले में या देशभक्ति के सिलसिले में, इस देश में ऐसे भी नारे लग रहे हैं कि हिन्दी, हिन्दू, हिन्दूस्तान, मुस्लिम भागो पाकिस्तान, हिंदुस्तान में रहना होगा, वन्दे मात्रम कहना होगा, मुसलमानों की एक तबाही, जूता-चप्पल और पिटाई, इस तरह के नारों के जरिए मुल्क की हालत इतनी ज्यादा खराब हो गई। मैं समझता हूं कि इन नारों पर कंट्रोल करने की जरूरत है और जो वाक्या हुआ है, उसकी छान-बीन के लिए मैं अनुरोध करता हूं कि होम मिनिस्टर साहब सैंट्रल कमेटी की एक जांच कमेटी बनाकर उसकी तफतीश करवाएं और जो मामले हों, इन्साफ के साथ, सख्ती के साथ उस पर अमल करके, आगे के लिए फिरकापरस्ती की रोकथाम करें ताकि मुल्क में सफर करने वालों को ज्यादा से ज्यादा आसानियों को तहफ्फुज़ फरहाम किया जा सके।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P.THAKUR): Now hon. Members, it is 1.30 p.m. This is a time you have to make a choice between physical hunger and political curiosity. (*Interruptions*)

SHRI VISHVJIT P. SINGH (Maharashtra): I always make a choice for physical hunger.

SHRI V. NARAYANASAMY: We all support Mr. Vishvjit Singh. (*Interruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): There are 11 names here on this statement itself and if you compromise in favour of your political curiosity, then those who have to seek clarifications and of course the Minister, will have to forgo their lunch or delay their lunch.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: No, no. We won't do that. We want the House to be adjourned now. (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): The House stands adjourned till 2.30 p.m.

The House then adjourned for lunch at thirty-three minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock,

[**The Vice-Chairman (Prof. Chandresh P. Thakur)** in the Chair.]

STATEMENT BY MINISTER

Incident at Palej Railway Station in Bharuch District of Gujarat—contd.

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: माननीय उपसभाध्यक्ष जी, आपकी अध्यक्षता में मैं इस सदन में बोल रहा हूं। आपको इस पद पर सदन ने अधिकृत किया है उपसभाध्यक्ष के पैनल में। हम आपका स्वागत करते हैं और विश्वास करते हैं कि इस सदन की सर्वोच्च परंपरा के अनुरूप और भी विकसित मूल्यों की स्थापना आपकी अध्यक्षता में होगी।

गृह मंत्री जी ने एक दल विशेष के एक विशेष सदस्य के विशेष आग्रह पर गुजरात के भरूच जिले के पालेज रेलवे स्टेशन पर 30 अप्रैल की दुर्घटना के संबंध में आज एक वक्तव्य दिया है। उसमें भारतीय जनता पार्टी के एक एम॰एल॰ए॰ श्री प्रकाश मेहता के नेतृत्व मे एक ग्रुप आ रहा था, कल दिल्ली

में जो भारतीय जनता पार्टी की रैली हुई है, उसमें भाग लेने के लिए।

उस स्टेशन पर लगभग दो सौ व्यक्तियों ने जिसको मंत्री महोदय ने अवैध भीड़ सम्बोधित किया, वैध-अवैध शब्द महत्वपूर्ण हैं, और गाड़ी पर पथराव शुरू कर दिया गया । उसके पहले जो स्वयं सेवक थे वे नारे लगा रहे थे। जैसा अनेक सदस्यों ने पूछा और प्रचलन हो गया है कि मॉयनोरिटी को दबाने के लिये आये दिन नारे लगते रहते हैं — कटी सुपारी पक्का पान, कटुवा जाओ पाकिस्तान इस तरह के नारे कानपुर में लगे बजरंग दल की मीटिंग में और सब एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं। जितने भी साम्प्रदायिक दल हैं और लगता है कि कुछ इस तरह के उत्तेजक नारे लगाये गये जिससे एक वर्ग-विशेष को मर्माहत होना पड़े । मैं जानना चाहता हूं कि जो लोग विधायक के साथ दिल्ली याता कर रहे थे उसमें कितने लोग थे और क्या सब लोगों के पास दिल्ली आने के लिये रेलवे टिकट था और जब दूसरी बार प्लेटफार्म पर चेन खींची गयी तो वह चेन किस डिब्बे से खींची गयी? जिसमें भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोग याता कर रहे थे, क्या उसी डिब्बे से यह जंजीर खींची गयी थी? इसके साथ ही तेज हथियार से हमला किया गया और जो अवैध भीड़ थी वह किस लिये जुटी थी ? और बस्ती कितनी दूरी पर थी स्टेशन से जहां पर यह घटना हुई है जो कि शर्मनाक घटना है और किसी भी दल के किसी भी कंवेंशन में या प्रदर्शन में भाग लेने आना कोई अपराध नहीं हैं, लेकिन बीच-बीच में इस तरह के जातीय और अल्पसंख्यकों पर उत्तेजना फैलाने वाली घटना हो, यह चिन्ता का विषय है । इतनी धारायें लगायी हैं गृह मंत्री जी ने, 302 से लेकर 323 तक 7-8 धारायें पुलिस ने लगायी हैं और रेलवे अधिनियम की 108वीं धारा में भी मामला दर्ज किया गया है। जो 21 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये हैं उनमें किस सम्प्रदाय के लोग हैं? हिन्दू बाहुल्य सम्प्रदाय के लोग हैं या मुस्लिम बाहुल्य सम्प्रदाय के लोग हैं और अब तक मंत्री महोदय ने 30 तारीख को यह घटना हुई, जानकारी हासिल करली होगी लोकल एडमिनिस्ट्रेशन से, स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन से कि वास्तविक मामला क्या था? यह जो वक्तव्य है एक अखबार के स्टेटमेंट की तरह से है, मंत्री के स्टेटमेंट की तरह इसमें विस्तार से नहीं कहा गया है और जो व्यक्ति मरा है उसका नाम क्या था? वह किस दल से संबंधित था? क्या प्रदर्शन करने दिल्ली आ रहा था? और किन परिस्थितियों में उसकी हत्या की गयी है, इसकी जानकारी सदन चाहेगा और इसके साथ ही जो साम्प्रदायिक दंगे इस तरह से देश में भड़क रहे हैं, कभी गुजरात जलने लगता है, कभी उत्तर-प्रदेश का कोई शहर जलने लगता है, किसी मस्जिद को गिराकर के मंदिर बनाने की बात नये सिरे से शुरु की जाती है, मथुरा हो या काशी विश्वनाथ का मंदिर हो, इन सबके पीछे जो कम्युनल फोर्सेज हैं और जो इस देश के वातावरण को दूषित करके साम्प्रदायिक उन्माद में, जैसे अफीम का नशा होता है, उस तरफ देश को ला देना चाहती है, उसके लिये क्या कार्यवाही आपका गृह मंत्रालय कर रहा है? और जो साम्प्रदायिक दल हैं, चाहे वह हिन्दुओं के हों, चाहे मुसलमानों के हों, चाहे क्रिश्चनों के हों, चाहे किसी और धर्म में विश्वास करने वालों के हों, उनको बैन करने के लिये बार-बार इस सदन में आवाज उठी है और अभी तक आपकी सरकार ने उस संदर्भ में कुछ भी नहीं किया है। इसलिये मैं आग्रह करुंगा कि जो साम्प्रदायिक दल विद्वेष की भावना भारत में रहने वाले नागरिकों पर जातीय, सम्प्रदाय और वर्ग-विशेष का हौवा खड़ा करके फैला रहे हैं और देश के वातावरण को विषाक्त, दूषित और रक्तरंजित कर रहे हैं, उनके खिलाफ आप क्या कार्यवाही कर रहे हैं?

श्री जगदीश प्रसाद माथुरः उपसभाध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने कल ही अपने वक्तव्य में कहा था कि सरकार बयान देते समय लीपापोती करने की कोशिश करेगी और मैंने यह भी कहा था कि सरकार निश्चित रूप से कहेगी कि कुछ उत्तेजक नारे लगे थे जिन नारों की प्रतिक्रिया में आक्रमण किया गया। ठीक वही मिथ्या आरोपों का एक पुलन्दा हमारे सामने लाकर रख दिया गया। मुझे दुख है कि जिन के ऊपर आक्रमण किया गया था और जिन्होंने आक्रमण किया था उन दोनों को एक ही पलड़े में रख दिया गया इस बयान में। मैं पूछना चाहूंगा मंत्री महोदय से कि उनके पास क्या सबूत है इस बात का जिसके आधार पर उन्होंने आक्रमणकर्ताओं को और जिन पर आक्रमण किया यानी जिनका एक आदमी मारा गया उन दोनों को बराबर के पलड़े के अंदर रखने की कोशिश की? उन्होंने आर॰एस॰एस॰ का नाम ले दिया। भारतीय जनता पार्टी

[श्री जगदीश प्रसाद माथुर]

की बात साफ थी क्योंकि झंडे लगे थे और हमारी स्पेशल बोगी थी। यह कहा जाता कि भारतीय जनता पार्टी के लोग थे तो इसमें सच्चाई है लेकिन आर०एस०एस० उसमें था यह उनकी जानकारी कहां से आ गयी? अब यह कहते हैं कि इंक्वायरी कर रहे हैं। न तो उन्होंने यह बताया कि कौन से उत्तेजक नारे लगे थे डिब्बों में से और न उन्होंने यह बताया कि आर०एस०एस० के आदमी थे वहां पर इसका उनको कैसे पता लगा कि आर०एस०एस० के आदमी थे। मेरा आरोप है कि आर०एस०एस० का नाम सिर्फ इसलिए लिया गया है जानबूझ कर जिससे हमला करने वालों के साथ साम्प्रदायिकता का झूठा आरोप सिद्ध करने की बुनियाद डाली जा सके। **(व्यवधान)**

श्री राधाकिशन मालवीय (मध्य प्रदेश): आप यह कहिये कि मंत्री जी झूठे हैं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैं यह कह रहा हूं कि मंत्री जी झूठे नहीं हैं मंत्री जी का जो वक्तव्य है बिल्कुल झूठा है। **(व्यवधान)**

डा० रत्नाकर पांडेय: मंत्री जी झूठे हैं तभी तो ऐसा बयान दिया। **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मंत्री जी को झूठा कहना और वक्तव्य को झूठा कहना दो अलग बातें हैं। **(व्यवधान)** मैं कह रहा हूं कि वक्तव्य बिल्कुल मिथ्या से भरा हुआ है। **(व्यवधान)** मैं पूछना चाहूंगा...

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): स्पष्टीकरण मांगें, आरोप न लगायें।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैंने पूछा है कि किस आधार पर दोनों को बराबर पलड़े पर रख दिया है और दूसरे यह पूछा कि आर०एस०एस० के लोग थे तो यह उन्होंने कहां से पता कर लिया.... **(व्यवधान)**

श्री विश्वजित पृथ्वीजित सिंह: मजा आ रहा है सुनने में। कहने दें यह क्या कह रहे हैं। **(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (मध्य प्रदेश): इन्होंने कहा कि इनको मजा आ रहा है **(व्यवधान)**

श्री विश्वजित पृथ्वीजित सिंह: उनकी बात सुनकर मजा आ रहा है। यह किस मंत्री जी के बारे में कह रहे है? मुझे सुन कर मजा आ रहा है...**(व्यवधान)**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: दंगे की चर्चा हो रही है और इनको मजा आ रहा है। **(व्यवधान)**

श्री विश्वजित पृथ्वीजित सिंह: दंगे कि चर्चा में मुझे मजा नहीं आ रहा है। दंगे कि चर्चा मैं करुंगा। जब मैं बोलूंगा तब आप को पता चलेगा कि दंगे की चर्चा कैसे की जाती है। **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: चार मिनट, कहा गया कि गाड़ी रुकती है। यह कहा गया कि नारों की प्रतिक्रिया में भीड़ आ गयी। कुछ और लोगों ने भी कहा है उसे मैं दोहराना चाहता हूं कि बतायें वहां से कितनी दूर गांव है और चार मिनट के भीतर-भीतर ही आदमी चले गये, लोग ले आये, आग लगाने का सामान ले आये, मिट्टी का तेल ले आये और हथियार ले आये। हथियारों का सबूत यह है कि एक आदमी को स्टैब करके मारा गया, यह स्वयं इस बात का सबूत है कि उनके पास हथियार थे। अगर सिर पर चोट लगा कर कोई मारा जाता तो शायद नहीं मानता लेकिन हथियार थे यह इस बात का सबूत है। दूसरे उन्होंने बताया कि उधर से बी०जे०पी० के लोगों ने नारे लगाये। यह उन्होंने कहां से पता कर लिया? दूसरे जो मैंने आरोप लगाया था — पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लग रहे थे, कश्मीर तो लेंगे ही हम भारत की बाकी जमीन भी लेंगे — ये नारे लग रहे थे, बाकी बेनजीर भुट्टो के नारे लग रहे थे, तो ये नारे नहीं लगे इस बात का सबूत उनको कहां से मिल गया जब कि इस बात का सबूत मिल गया उन डिब्बों में नारे लगे? दूसरी तरफ से नारे लगे हैं या नहीं लगे हैं यह बात उनको कहां से मालूम हुई? क्या सरकार के लोगों ने, मिनिस्टरी के आदमी ने..**(व्यवधान)**.. यहां पर उनको मालूम है कि हम लोगों की रैली थी और उस रैली में उस डिब्बे के जो बचे हुए लोग थे, आये थे। मैं

पूछना चाहूंगा कि क्या गृह मंत्रालय के किसी व्यक्ति ने, मंत्री महोदय के किसी प्रतिनिधि ने या स्वयं उन्होंने उन लोगों से मिल कर जानकारी करनी चाही थी? अगर नहीं चाही तो क्यों नहीं चाही? उन्होंने उन लोगों से मिलने को अवॉएड करना क्यों चाहा? इसलिए मेरा आरोप है कि वे जानबूझकर सच्चाई जानना नहीं चाहते थे। वे झूठ का पुलन्दा हमारे सामने रखना चाहते थे।

कल मैंने यह बात कही थी कि मुझे सन्देह है पर अब मुझे सन्देह नहीं। बाकी उधर से बोलते हुए कई मित्रों ने परसों कहा था कि पाकिस्तान के एजेंट कश्मीर-पंजाब से निकल कर हिन्दुस्तान भर में फैल गये। जांच के अंदर यह बात शामिल होगी कि नहीं क्योंकि मुझे सन्देह है कि सरकार का रवैया एक पक्षपात का रवैया रहा है और एक विशेष सम्प्रदाय के हाथ उन्होंने कम से कम अपनी नीतियों को गिरवी रख दिया। उस गिरवी रखने के कारण अत्याचार करने वाले और जिन पर अत्याचार हो रहा है उन दोनों को एक ही पलड़े में रखा है। मैं इन दोनों बातों की सफाई चाहूंगा। वैसे बाकी मेरे मित्र श्री महाजन बहुत कुछ कह चुके हैं उनको मैं दोहराना नहीं चाहता।

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Mr. Vice-Chairman, first of all, I congratulate you on your having occupied the Chair as Vice-Chairman of the House and I am speaking before you today...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): With a promise of cooperation.

SHRI V. NARAYANASAMY: Yes, mutual cooperation and help.

Sir, the statement made by the honourable Minister is incomplete. I find from the Members of this House that when a particular political party is referred to, they raise a strong objection to it and they say that the statement is false. I would like to say that the RSS party has been recognised and it has elected members...

SHRIMATI MARGARET ALVA (Karnataka): RSS is not a party.

SHRI V. NARAYANASAMY: Their members have been elected. When the Minister says in his statement that BJP and RSS members were travelling in the train, the BJP Members are taking exception to it. I do not know the reason behind it, especially the BJP which has been an ally of RSS. They are not recognising RSS when a statement is given in the House by the honourable Minister. As far as the slogans are concerned, it is very clear that religious fundamentalism has taken roots in this country for the past four to five months because of the policy adopted by some political parties. Some political parties are openly talking of Hindu Rshtra and some of them are for Muslim fanaticism. Because of such propaganda by the political parties in our country rioting, killing of innocent people, massacre of one community by another, are taking place. This is a sorry state of affairs. In a secular country like India religious fundamentalism has been allowed to grow even by responsible political parties. Therefore, when the Minister said that Bharatiya Janata Party and RSS people were going in the train in two bogies, the BJP Members were opposing it and I do not know the reason behind it. As far as the incident is concerned...

SHRI KAMAL MORARKA (Rajasthan): On a point of order. Is he asking for a clarification or is he refuting what Mr. Mathur has said? Is this a debate? Is he spending the time of the House for refuting what Mr. Mathur has said? We are not interested in what Mr. Mathur has said. We are interested in

[Shri Kamal Morarka]

seeking clarifications. You are wasting the time of the House.

SHRI V. NARAYANASAMY: What are you doing now? Are you going to speak?

डा० अबरार अहमद खान (राजस्थान): दोनों बातें कम्बाइन्ड हैं। स्पेशल मेंशन में जो आरोप लगाये गये हैं उनके बारे में कुछ सदस्य बोलते हैं तो इसमें कुछ, गलती नहीं है।

SHRI KAMAL MORARKA: Mr. Vice-Chairman, I want your ruling. If they are going to make speeches correcting what other Members have said, then we can have a Short Duration Discussion itself on this.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Kindly put brief and clear questions for clarifications.

SHRI G. G. SWELL (Meghalaya): Sir, although I have been in the other House for four terms, I have yet to learn many things here. Now, I suppose that this was only to seek clarifications in the form of questions. But the gentleman is making a long speech...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Are you on a point of order?

SHRI G.G. SWELL: Should we make a speech on the pretext of seeking clarifications or should we only put certain questions which are relevant to the subject under discussion? This is what I want to know. Of course, I have yet to learn many things. *(Interruptions)*

AN HON. MEMBER: Why should you unnecessarily intervene?

SHRI G.G. SWELL: I am raising a point of order.*(Interruptions)*.

SHRI V. NARAYANASAMY: You are getting the support of BJP. You are bound to support them, I know.

SHRI KAMAL MORARKA: I am also getting the support of Narayanasamy.

That is more important.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): I think we should seek everybody's cooperation. We have to cooperate with each other. We know what the problem is. So far as the procedure is concerned, Members are supposed to ask clarifications specifically with relevance to the statement by the Minister. Marginal deviations here and there we have sort of to learn to live with. So, please, Mr. Narayanasamy.

SHRI V. NARAYANASAMY: Yes, Sir. It is reported that about 350 persons, some of them, pulled the chain after asking the people who were travelling in the two bogies to come out. The hon. Minister says in his statement that about 200 people gathered. Sir, it is very difficult also for the Minister to say that all these people belonged to a particular community. Sir, what is the role of the railway authorities, apart from the police administration, and what is the complaint lodged because the incident took place at the railway station? Was there any reported complaint by one of

the persons who have been travelling in the train to the railway authorities? Sir, I can see from the statement that there was a long delay in bringing the situation under control by the police authorities, even though the police had been summoned to the spot. Therefore, I would like to know, what was the reason for the delay in controlling the situation by the police authorities?

Sir, in the last para of the statement the Minister says that the Inspector-General of Police is conducting a high level inquiry. Sir, my submission is that the Inspector-General of police conducting an inquiry will not be impartial, and therefore I demand—the Home Minister will agree with me that an inquiry by a judicial officer should be there so that the report will be unbaised, and if the police officers conduct the inquiry, motive will be imputed by the persons who are interested in this incident. Thirdly, Sir, did the Chief Minister of the State visit the place, and if so, what action has he taken after the incident was reported to him?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Shri Santosh Bagrodia. Not there. Shri S.S. Ahluwalia.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: उपसभाध्यक्ष महोदय, कल...

DR. NAGEN SAIKIA (Assam): He should be brief. Please ask him to be...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Are you directing me?

DR. NAGEN SAIKIA: I am requesting the Chair.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Then you should stand up and request.

DR. NAGEN SAIKIA: The Member always kills the time of the House.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): No aspersions, please.

SHRI M.M. JACOB (Kerala): No Member can say that any other Member is wasting the time of the House. It is really objectionable

डा० रत्नाकर पाण्डेय: आप अपने शब्दों को वापस लें।

DR. NAGEN SAIKIA: If it is an aspersion, I am ready to withdraw it.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: उपसभाध्यक्ष महोदय, गुजरात में स्टेशन पर जिस ट्रेन में बी०जे०पी० के कार्यकर्ता दिल्ली में कश्मीर बचाओ की मीटिंग अटेंड करने के लिए आ रहे थे कल से उस पर हमले का मामला सदन में उठ रहा है। बड़े अफसोस की बात है कि इस सरकार की एक बैसाखी खुद खड़ी हो कर के कह रही है कि तुम ठीक से नहीं चल रहे हो और जो कुछ बयान ले कर आए हो वह सत्य से परे है। मैं भी यह कहता हूं कि यह बयान सत्य से परे है। इस में सत्यता नाम की कोई चीज़ नहीं है क्योंकि यह घटना जो खुद गृह मंत्री जी कहते हैं कि आर०एस०एस० और बी०जे०पी० के कार्यकर्ताओं ने कुछ ऐसे प्रोवेकेटिव स्लोगन उठाये जिसके कारण उधर से भी नारे लग रहे थे और इस सरकार की एक बैसाखी खड़ी हो कर कह रही है कि वह नारे वहां किसी एक समुदाय के लोग स्टेशन पर खड़े हो कर लगा रहे थे। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे, बेनज़ीर भुट्टो जिन्दाबाद के नारे लगा रहे थे। नारों की बात आ रही है। सरकार का बयान जहां तक है कि नारे जिस तरफ से भी चल रहे हों मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या नारे लग रहे थे? यह नारे बम्बई से जब ट्रेन चली तब क्या यह नारे नहीं लग रहे थे? मैं जहां तक जानता हूं हर एक स्टेशन पर हर एक बाज़ार में, हर जगह जहां भीड़ इकट्ठी होती है, नारे लग रहे थे। हर एअरपोर्ट पर इंटेलीजेंस का आदमी होता है। जिस वक्त बम्बई से ट्रेन चली तो क्या इंटेलीजेंस ने दिल्ली तक आने के रूट में जितने भी स्टेट्स पड़ते हैं उनको एलर्ट किया कि इस मे कुछ लोग ट्रेवल कर रहे हैं जिनके नारे भड़कीले हैं और किसी एक विशेष

[श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया]

समुदाय के दिल में या उनके मस्तिष्क में चोट पहुंचा सकते हैं और कहीं ऐसी घटनाएं घट सकती हैं, दंगा हो सकता है? क्या ऐसी कोई इनफारमेशन गृह मंत्री जी को मिली थी या नहीं मिली थी? नारे क्या थे? महोदय, जहां तक मैं जानता हूं एक तरफ हो सकता है पाकिस्तान ज़िन्दाबाद के नारे लग रहे थे परन्तु दूसरी तरफ यह नारे भी लगे थे—राम, कृष्ण, विश्वनाथ, तीनों लेंगे एक साथ। यह भी नारे लगे थे, इस देश में हिन्दू साठ करोड़, देंगे मस्जिदों को तोड़ मरोड़। यह भी नारे लगे थे 370 उठाओ, कश्मीर बचाओ और मुसलमानों को पाकिस्तान भगाओ। यह भी नारे लगे थे कि कटी सुपारी हरा पान, कटुआ को भगाओ पाकिस्तान। अगर यह नारे लगे थे तो गुजरात की सरकार जो आपकी पार्टी की सरकार है, चिमन भाई पटेल की सरकार है, वह क्या कर रही थी? क्या उसको इनफारमेशन मिली थी और उसने क्या प्रिकाशनरीमेज़र्ज़ लिये थे? एक छोटे से स्टेशन पर दो सौ, चार सौ आदमी इकट्ठा हो गये और वहां की जी०आर०पी० को पता नहीं लगा। स्टेशन पर जो इंटेलीजेंस का अफसर था उसको पता नहीं लगा और शहर में जो इंटेलीजेंस अफसर है उसको पता नहीं लगा। एस०पी०, डी०एम०, डी०एस०पी०, ए०डी०एम० वहां नहीं पहुंच सके। ढाई घंटे के बाद पहुंचे जैसे कि बी०जे०पी० के एक सदस्य ने बताया कि ढाई घंटे के बाद वहां पुलिस पहुंची। मेरा कहना है कि इसमें किस की कमजोरी है, किस की गैरज़िम्मेदारी है? इस में अगर किसी की गैरज़िम्मेदारी है तो वह चिमन भाई पटेल की सरकार की है, गुजरात सरकार की कमी है, डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन की कमी है जिन्होंने इस पर सतर्क होने की कोशिश नहीं की और ऐसा माहौल बना। इन चीज़ों को सामने रखते हुए हमें एक चीज़ पर विचार करना पड़ेगा कि जब हमारे मुल्क में चारों तरफ ऐसा माहौल बन रहा है। कल उस रैली को हमारे मुल्क के बड़े ही संजीदा लीडर श्री एल०के०आडवाणी, श्री अटल बिहारी वाजपेजी और श्रीमती विजय राजे सिंधिया ने एड्रेस किया और वहां जो बातें कहीं **(व्यवधान)**

डा० रत्नाकर पाण्डेय: माथुर जी भी गये थे । **(व्यवधान)**

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: इन्होंने अपने भाषण में जो बातें कहीं एक तरफ तो इन्होंने अपना स्टेंड क्लीयर कर दिया परन्तु बड़े अफसोस की बात है वहां खड़े हो कर इन नारों के बारे में जो पाकिस्तान के समर्थन में नारे लगाए गए वह तो बताएं।

किंतु अपनी कमजोरियों को नजरअंदाज कर गये। महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से कहना चाहूंगा कि आइंदा ऐसी रैलियां रोज होंगी और यहां के बोट क्लब को छोड़िये, शहर-शहर में बोट क्लब बन जायेंगे क्योंकि आने वाले दिनों में कई चीजों के ऐग्रीमेंट का टाइम खत्म हो रहा है, कहीं बाबरी मस्जिद तोड़ी जायेगी, कहीं बनायी जायेगी, कहीं राम जन्म भूमि तोड़ी जायेगी और बनायी जायेगी। अब नारे ही जब लगने लगे हैं कि राम, कृष्ण, विश्वनाथ तीनों लेंगे एक साथ तो एक ही साथ सैलाब आने वाला है। तो मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री महोदय से पूछूंगा कि इस के बारे में हर एक स्टेट्स के चीफ मिनिस्टर्स की या होम मिनिस्टर्स की मीटिंग बुलाकर कोई एक फैसला लेने की बात सोच रहे हैं या नहीं सोच रहे हैं? कम्यूनल टेंशन को कम करने के लिए क्या कर रहे हैं। इसके साथ साथ मैं गुजारिश भी करूंगा आपके माध्यम से और जब से सदन का सत्र चला है तब से गुजारिश कर रहे हैं कि कंट्री में जो टेंशन का माहौल बन रहा है उस पर इस सदन में चर्चा करने की जरूरत है। जैसा कि हमारे बंधु प्रो० साइकिया जी ने कहा कि मैं वक्त बरबाद करता हूं तो मैं वक्त इसलिए बरबाद करता हूं कि यह सरकार काम के विषयों पर कोई चर्चा नहीं करती और जब किसी सदस्य को कोई वक्त मिलता है तो वह अपने दिल के गुबार को निकालने का रास्ता ढूंढ़ता है चाहे वह इधर बैठा हो या उधर बैठा हो। आज दिल में जो गुबार जमा है उसको निकालने का एक मौका चाहिए और ये जो शार्ट ड्यूरेशन नोटिस हम लोगों ने दिये हुए हैं उन पर भी जरा विचार करें और कम्यूनल टेंशन को भी डिसकस करें।

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): स्पष्टीकरण।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: स्पष्टीकरण ही मांग रहा हूं। वह भी एक स्पष्टीकरण है। आपके माध्यम से सरकार को ही बता रहा हूं कि वे भी जरा सामने आयें और बतायें। ऐसी ट्रेन जिसमें जलूस चला था तो यह बतायें कि बम्बई से जब यह चली थी तो उसमें सिक्योरिटी की कोई व्यवस्था थी या नहीं थी। उस ट्रेन में कोई पुलिस वाला चला था या नहीं क्योंकि ऐसा देखने में आया है कि पहले जब भी कोई पोलिटिकल पार्टी ऐसे बुक करती है तो उनके साथ इंटेलीजेंस के आदमी चलते हैं। अगर चलते हैं और चले थे तो उनकी क्या रिपोर्ट है यह मैं जानना चाहता हूं। धन्यवाद।

SHRI VISHVJIT P. SINGH: Mr. Vice-Chairman, Sir, I rise with a very heavy heart. I have been in this Chamber since the year 1982. It is not a very long period of time. But never ever—I repeat never, ever--have I ever seen a statement which in tone and tenor is like this statement. This is a statement which is calculated, and I repeat this in all responsibility that this is a statement which is calculated to create communal tension. And I straightaway go to my clarifications. I want to know from the hon. Minister as to why he has chosen to blame the members of one community. No statement made in either of the Houses of Parliament by any Government prior to this has ever said so blatantly "200 Muslims". How do you know they were Muslims? Did you have some special knowledge, Mr. Minister, that you knew they were Muslims?

AN HON. MEMBER: He is a new Minister.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: I want to know from him as to what clouds his vision that when he looks and sees something happening which is dangerous, he thinks that it is being done by Muslims? Is that your vision, Mr. Minister? And behind the Muslims, he sees the hand of Pakistan. (*Interruptions*) That is what you want to do. (*Interruptions*). I am seeking a clarification from the hon. Minister. I want to know what clouds his vision. How did he come to the conclusion that these were Muslims?

AN HON. MEMBER: Where is it written?

SHRI VISHVJIT P. SINGH: It is written there.

SHRI KAMAL MORARKA: Who said that all Indian Muslims are Pakistanis? he is just sporling the atmosphere and communalising the House also. He is communalising the House also.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: No, no. (*Interruptions*).

SHRI KAMAL MORARKA: Where is it written that behind every Muslim, there is Pakistan? (*Interruptions*).

SHRI VISHVJIT P. SINGH: I am sorry. You had your say. Kindly hear what I have to say. (*Interruptions*) I am not saying that. This is what the hon. Minister has said.

SHRI KAMAL MORARKA: Who said 'Pakistan' just now? The word has been used by the other side, not by us.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: All the B.J.P. Members have said 'Pakistan'.

SHRI KAMAL MORARKA: Are your seeking clarifications on the Minister's statement, or, on what the B.J.P. Members have said?

SHRI VISHVJIT P. SINGH: Please allow me to continue. *(Interruptions)*

SHRI KAMAL MORARKA: Mr. Vice- Chairman, Sir, please bring this house to some semblance of order. If they are interested in joining a debate with B.J.P., they can go to the Central Hall or the Boat Club. Why are they wasting the time of the House? *(Interruptions)* Sir, I have a point of order. Please hear me for two Minutes. Perhaps, on this issue, our views may not be varying. But the manner in which we are trying to channelise the discussion is highly objectionable. I may not agree with Mr. Mathur, but I will defend Mr. Mathur's right to speak. We cannot stifle him.

SHRIMATI MARGARET ALVA Nobody is stifling him. *(Interruptions)*

SHRI KAMAL MORARKA: Pleas listen to him. You cannot reply to him Your can only seek clarifications. This i not a debate. When there is a debate you can reply to him.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF CHANDRESH P. THAKUR): What your point of order?

SHRI KAMAL MORARKA: M

[Shri Kamal Morarka]
point of order is that clarifications have to be sought only on the Minister's statement and not on what the other Members have said in the House.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Mr. Vishvjit Singh is a very senior Member. I am sure he will apply the necessary moderation.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: I am not going to say that the Minister said. I am not saying that the Minister said that every Muslim is a Pakistani. I am not saying that, Mr. Morarka.

AN HON. MEMBER: You are repeating it.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: I am not saying that. I am not saying that the Minister said that every Muslim is a Pakistani. But I take strong objection, very strong objection, to the mention in the statement '200 Muslims......

श्री सिकंदर बख्त (मध्य प्रदेश): मुसलमान कहां लिखा है, भाई? वक्तव्य में लिखा है कि
"Some local Muslims resented"

This is being twisted.

उन्होंने रिज़ेंट किया है। ...(**व्यवधान**)...

SHRIMATI MARGARET ALVA: Please read the statement. It says "The BJP/RSS volunteers in the train were shouting slogans, of which some were apparently resented by some local Muslims living close to the Railway Stateion."

AN HON. MEMBER: Not '200 Muslims' (*Interruptions)*

SHRI KAMAL MORARKA: What is wrong with that?

SHRIMATI MARGARET ALVA: What do you mean by 'Muslims'? Why 'Muslims'? (*Interruptions*)

SHRI KAMAL MORARKA: If Mr. Vishvjit Singh cannot understand this, I pity his intelligence. (*Interruptions*)

SHRI VISHVJIT P. SINGH: You have proved my point, Mr. Morarka. Mr. Vice-Chairman, if these 200 people belonged to all the communities, ...(*Interruptions*) what was the need for the hon. Minister to mention that this was resented by the local Muslims? This proves my point.

SHRI KAMAL MORARKA: It proves nothing.

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: अंग्रेजी में मुसलमान शब्द है।

श्री कमल मोरारका: अंग्रेजी में मुसलिम शब्द नहीं है। ...(**व्यवधान**)

श्री सिकंदर बख्त: मुसलमानों ने नाराजगी का इजहार किया है। ...(**व्यवधान**)

SHRI KAMAL MORARKA: They cannot doctor the Statement. They can only seek clarifications. (*Interruptions*) No clarification is being sought. They want to doctor it in a particular manner. They can do so when they become Ministers. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): There are two things. On the general procedure, there should be no dispute, on difference of opinion, that the clarifications have to be sought within the confines of the statement made by the hon. Minister.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: This is what I am doing.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF CHANDRESH P. THAKUR): I have studied the statements carefully. There are two points. One is, the words '200 persons' do not identify any community. At the some time, the earlier sentence says "...some local Muslims living close to the railway station". By implication,...(*Interruptions*) Have patience.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): If Mr. Vishvjit Singh's clarification is on the point, whether the Minister has before him some bases to know that the people living in the neighbourhood were all Muslims or only Muslims, then the clarification has some relevance.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: That is what I am saying. Excuse me, Sir. (*Interruptions*). I am not yielding. I would like to know from the Minister why he has used this sentence, this reprehensible sentence, this word, which has cast aspersions on one community, a community, let me tell you, Mr. Vice-Chairman, which I hold in great esteem, a community...

SHRI KAMAL MORARKA: This is highly objectionable. He is trying to cast aspersions. (*Interruptions*).

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: (Andhra Pradesh): What a pity. You are taking advantage of this to fan communal feeling. We refuse to be associated with this. ...(*Interruption*). What a pity, how the mighty have fallen!

SHRI KAMAL MORARKA: The party which shamelessly fields Arun Govil for election campaign talks about Muslim respect to us.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Better not talk like this. All of us are Indians. Do not try to take advantage. Do not talk to take advantage. Do not talk like this only to win the battle against the Government.

SHRI S.S. AHLUWALIA: You go through the statement. Do not shout. (*Interruption*). This statement is not prepared by my party, it is prepared by your Government. It is not our statement.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF TOURISM (SHRI SATYA PAL MALIK): Sir,...

SHRI VISHVJIT P. SINGH: Is the hon. Minister seeking clarification?

SHRI SATYA PAL MALIK: I want to make a submission. विश्वजीत जी ने जिस चीज की तरफ ध्यान दिलाया है, मैं यह मानता हूं और सरकार की तरफ से यह निवेदन करना चाहता हूं कि बेहतर होता यदि इस तरह से उनका बयान नहीं होता। ...(व्यवधान)...लेकिन...

SHRI VISHVJIT P. SINGH: That is right. Mr. Satya Pal Malik, we commend you.

श्री सत्यपाल मलिक: श्रीमन्, लेकिन जिस तरह से इस चीज की हम ने यहां चर्चा कर दी है, उससे और ज्यादा नुकसान हो गया है। मैं निवेदन करूंगा कि इस को यहीं भूल जाना चाहिए।

SHRI VISHVJIT P. SINGH: I will accede to the request of my friend, Mr. Malik, I will seek only one last clarification from my friends.

SHRI DIPEN GHOSH: Say, 'hon. Minister' not 'friend'.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Ministers are not friends, they are enemies, mind that. (*Interruption*).

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Why did they not make Mrs. Renuka a Minister?

SHRI VISHVJIT P. SINGH: I was always under the impression that on that side sat my opponents and on this side my enemies. (*Interruptions*).

Now, after what Mr. Satya Pal Malik has said, I would like to seek only one last clarification. It has been said that I am vitiating the atmosphere. I am not vitiating the atmosphere. It is this statement which is vitiating the atmosphere. I would like to know from the Minister, is this statement drafted by the BJP/RSS or is it drafted by you? Let us know that and that is my last clarification.

डा० अबरार अहमद खान: उप सभाध्यक्ष महोदय, कल से इस घटना की बात जब से सदन में आई है, यह चर्चा चल रही है। इस घटना में एक व्यक्ति मारा गया है, बेहतर होता कि यह सवाल इस प्रकार से न होता कि मरने वाला हिन्दू था या मुसलमान था। मारने वाला हिन्दू था या मुसलमान । यह बेहतर होता कि यह नहीं कहा जाता कि मरने वाला कांग्रेस का था या आर०एस०एस० का, मरने वाला एक हिन्दुस्तानी था, एक भारतीय था, एक इंसान था और उसके दर्द की चर्चा को लेकर, उसके दर्द की बात को लेकर हम यहां बात करते। मारने वाला कौन था यह तो जिस सरकार का आप समर्थन कर रहे हैं, बैसाखी देकर जिसको खड़ा कर

[डा० अबरार अहमद खान]

रखा है, वही बतायेंगे। महोदय, मैं इस संबंध में बहुत साधारण से कुछ सवाल करना चाहता हूं। सवाल बहुत साधारण हैं, लेकिन यदि उन सवालों का जवाब माननीय मंत्री जी दे दें तो जिस घटना की हम चर्चा कर रहे हैं उस पर काफी प्रकाश पड़ सकता है। मेरा पहला एक छोटा सा सवाल यह है कि वह लोग जो वहां इकट्ठे हुए थे वह वहीं के रहने वाले थे या कहीं से आकर इकट्ठे हुए थे या आस-पास के लोग थे? अगर इस सवाल का जवाब कोई जांच करके यह दें तो इस घटना पर काफी प्रकाश पड़ सकता है। दूसरा मेरा यह सवाल है कि वहां यह कहा गया कि रेलवे पुलिस वहां मौजूद थी, रेलवे पुलिस के दो सिपाही मौजूद थे थ्री नोट थ्री को रेलवे के बीच के ज्वाइंट को काटने में काम लिया गया। मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि क्या वहां रेलवे पुलिस थी? अगर थी तो उसका आचरण क्या था? उसने वास्तव में क्या किया और क्या वहां पुलिस रेगुलर विज़िट पर जिस तरह से लगाई जाती है उस तरह से लगाई गई थी या विशेष रूप से, किसी जानकारी होने के बाद, उन दो सिपाहियों को, वहां यदि थे, को नियुक्त किया गया? इसके साथ ही साथ, यह कहा गया है कि चार मिनट ट्रेन जब वहां ठहरती है और वक्तव्य में कहा है कि चार मिनट के दौरान वहां कोई घटना हुई। तो जंजीर खींची गई और उसके बाद यह घटना हुई। जो जंजीर खींचने के पहले जब चार मिनट ट्रेन वहां रुकी उस वक्त क्या वहां कोई भीड़ थी, क्या कुछ लोग वहां एकत्रित थे? अगर थे तो यहां एक बहुत स्पष्ट बात हो जाती है कि चार मिनट के दौरान झगड़ा क्यों नहीं हुआ। चार मिनट ट्रेन के रुकने के बाद जब दोबारा ट्रेन चली जंजीर खींच कर झगड़ा हुआ तो वह जंजीर जैसा भाई रत्नाकर जी ने बताया कि किस डिब्बे से खींची गई रेलेवेंट फिक्शन है जिस डिब्बे में वह यात्री, मैं यात्री कहूंगा, उनको मैं किसी राजनीतिक पार्टी का नहीं बोल रहा हूं, जो यात्री जिनके साथ यह घटना घटी क्या उस डिब्बे से जंजीर खींची गई या इस प्रकार के यात्री जो अन्य डिब्बों में यात्रा कर रहे थे उससे जंजीर खींची गई या किसी अन्य डिब्बे से खींची गई? महोदय, एक बात और कि इस स्टेशन के पहले या इसके ठीक पहले वाले किसी स्टेशन पर उन यात्रियों ने कोई लूटपाट की थी? यदि की थी, माननीय मंत्री जी इसकी जांच करके जवाब दें तो क्या उस लूट-पाट से इस झगड़े का कोई ताल्लुक था? इसके साथ ही साथ, माथुर साहब सुनिए बात, बात को स्पष्ट होना चाहिए, तो अंतिम मेरा सवाल इसमें है कि जो नारों के बारे में बात कही गई है तो वह सवाल जैसे पूछा जा चुका है कि कौन से नारे लग रहे थे और दूसरे पक्ष में जो नारे लगाने की बात कही है वह नारे भी क्या माननीय मंत्री जी यह बहुत संवेदनशील मामला है, क्या वह नारे भी जो दूसरे पक्ष ने लगाए वास्तव में वहां लगाए गए हैं? महोदय, नारे की जहां तक बात है यह कोई नई नहीं है। इस सदन में मैंने कई बार इस बात को दोहराया। आज जितने भी सांप्रदायिक झगड़े इस देश के अन्दर हुए हैं उनकी नींव में अगर खोद कर देखा जाए तो यही संवेदनशील नारे और भड़काने वाले नारे निकलेंगे। तो मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहूंगा और उसके पहले एक बात कहना चाहूंगा कि इंसान कोई भी मरे, आदमी कोई भी मरे, मुल्क के किसी कोने में मरे, मुल्क के किसी गांव में मरे, किसी कस्बे में मरे, इस सदन में बैठने वाले प्रत्येक सदस्य को, हरेक आदमी के मरने की तकलीफ उतनी ही होनी चाहिए जितनी तकलीफ कल हुई। उसी प्रकार से उसके बारे में वक्तव्य मांगना चाहिए जिस प्रकार से कल मांगा। माननीय मंत्री जी, क्या आतंकवाद या सांप्रदायिक झगड़ों में जो हत्याएं हुई उस में कितने लोग मरे, क्या आप उनका वक्तव्य भी यहां देंगे कि उनको कैसे मारा गया? वह कैसे झगड़े हुए? कानपुर में पी०ए०सी० ने गोली से कैसे लोगों को मारा, कोटा में कैसे मारा, जयपुर में कैसे मारा, मेरठ में कैसे मारा? माननीय उप सभाध्यक्ष महोदय, दर्द के अन्दर दोहरे मापदंड नहीं होने चाहिएं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी मेरा सीधा सवाल है कि जो लोग इस झगड़े के अलावा अन्य झगड़ों में भी इस प्रकार से मरे हैं, उनके बारे में भी क्या इस सदन में रोशनी डालेंगे?

अंतिम बात मैं कहना चाहता हूं कि मरने वाले इंसान की वकालत करने के लिए हम सदन में खड़े होते हैं। मरने वाले की पवित्र आत्मा एक इंसान की है और उनकी वकालत करने के लिए पहले वकालत करने वालों को इंसान बनना पड़ेगा। धन्यवाद।

DR. NAGEN SAIKIA: Sir, I want to know how many Members of party are allowed to seek clarifications, under the rules of the House, on the statement made by the Minister.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): As far as I am concerned, I am following the rule followed earlier-all the names. Kumari Chandrika Kenia (*Interruptions*)...

डा० रत्नाकर पाण्डेय: सब पूछेंगे। सब पूछेंगे। ...**(व्यवधान)**...

KUMARI CHANDRIKA PREMEJI KENIA (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, Sir, the starting point of the incident, as presented in the statement made by the honourable Minister, seems to be the slogan shouting by the BJP group and, I quote, "resented by some local Muslims living close to the Railway Station." Pausing here for a moment, I beg to submit that on the face of it it sounds very fishy and it looks like the cause and effect. There is the other version made by the BJP People, those people who were travelling in the same train. They told us that a mob of 200-300 people was already present at the railway station and they were shouting slogans like, "Allah-o-Akbar" and "Pakistan Zindabad" and it was a pre-planned attack. I would like to know from the honourable Minister what the facts are whether the slogan shouting was done by the mob which was present at the railway station and whether the attack was a pre-planned attack. My second clarification will be: The honourable Minister has stated that 21 persons were arrested by the police. I would like to know from the honourable Minister whether any weapons were seized from these people who were arrested by the police and whether they were local people or they were infiltrators who are scattered in the country with a view to destabilizing the country and destroying the unity and integrity of the country. Finally, in the last paragraph it is stated that the State Government has ordered a high-level inquiry and the IGP is conducting the inquiry. My question will be: How much time will the IGP take to complete the inquiry?

Thank you.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): Sir, I would like the Minister first to tell us, very clearly, what were the slogans that were shouted, because the whole provocation appears to have come out of slogans. It is a fact that the BJP-RSS-VHP-all the hyphens, dashes and obliques have been raising highly provocative and disgusting slogans all over the country. One of the most stupid slogans I have heard is, *Garvse bolo hum Hindu hain.* Supposing I don't say with *garv* that I am a Hindu, does it mean that I am not a Hindu? Who are these people to tell us who is a Hindu and who is not a Hindu? So, these provocative slogans have definitely poisoned the atmosphere very greatly in the country. So, I think one needs to look at what the slogans shouted were.

But I will say this, that in a democratic country, however provocative a slogan, it nevertheless does not justify the taking the life of anybody, and since a life has been taken, the culprits behind that must be caught and due punishment must be given so that it is possible to maintain some decorum or order.

The third point I would like to know is, have you arrested any of the slogan shouters, because they are also quilty of breach of peace? There are a number of sections of the Indian Penal Code which have been violated by uttering these objectionable slogans.

So, consequently I would like to know from the Minister, if the Minister is listening, whether the Government of Gujarat has arrested any of the slogan-shouters.

Finally I would like to ask what steps the Government is taking to prevent this kind of situation from worsening because, as my friend here mentioned, this is the pattern we are finding all over the country.

I would like to know that the Government is going to do because a four-month deadline has been given by the BJP/RSS/VHP and God knows who else to the Government of India, and they have threatened to go ahead from June 8 with the the Ram Mandir construction.

Now there is a concern in the country today that the BJP/RSS/VHP etc. have

[Shri Subramaniam Swamy]

infiltrated the Government at all levels including the Doordarshan, and consequently their power is so enormous to do damage.

I would, therefore, like to know from the Government what concrete steps you have taken to see that this does not happen.

I would like to say that in order to prevent this from worsening if the Government tomorrow decides to ban the R.S.S., I would certainly support the Government in that.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, I am very sad that we have to discuss such matters in this august House. I hope that the whole House will share my feelings.

What has happened at the Palej Station is not a particular incident to be overlooked. It exposes the Symptem of malaise that is rocking the unity and integrity of the country for a few months. Clashes between different groups of castes, regions and religions spark at a certain place and spread to other areas like wild fire.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Please come to clarifications.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: I am coming.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): We have taken a lot of time.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: No, Professor, you are my friend. (*Interruptions*) I don't want to cast aspersions on the Vice-Chairman.

If such clashes are to be averted, the favour of patriotism should be inculcated in the minds of the citizens of India from Kashmir to Kanyakumari. Under such circumstances, Political parties should restrain themselves in their outbursts. For political advantages the parties should not indulge in slogan-shouting or in any other unwarranted activities.

In the train at the Palej Station some slogans which were raised, have provoked the local people. I say, "the local people." The Government has not come forward to tell us what exactly those slogans were. Will the Government make a clarification on this?

The other clarification I seek is, usually and in general the Government will order a magisterial enquiry either by an administrative officer like R.D.O. or by a judicial officer. Here peculiarly they have left the enquiry to be done only by a police officer. Why has the Government not come forward to order a judicial enquiry?

I seek these two clarifications.

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, माननीय मंत्री जी ने जो बयान सदन के सामने रखा है, वह बयान स्वयं ही इस बात को स्पष्ट करता है कि सरकार और मंत्री जी स्वयं ही इस प्रश्न पर स्पष्ट नहीं हैं क्योंकि अगर सरकार स्पष्ट होती तो बयान भी स्पष्ट रूप से आता लेकिन यह बात सही है कि लीपापोती करने की कोशिश की गई है और ऐसे समय में जबकि धर्मान्धता, कट्टरवादिता और सांप्रदायिकता हमारे देश के लिए और राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए बहुत जबरदस्त खतरा पैदा कर रही है, मैं यह कहना चाहता हूं कि बाहरी दुश्मन से तो बचा जा सकता है लेकिन अंदरूनी दुश्मन बहुत ही खतरनाक होता है । ऐसी स्थिति में ये जो नारे समय-समय पर आते हैं उन नारों के आधार पर सांप्रदायिकता का विष तेजी के साथ फैलता जा रहा है।

माननीय मंत्री जी ने कहा है कि नारे लग रहे थे, लेकिन और उस समय जबकि कुछ ही दिन पहले भड़ौच में साम्प्रदायिक दंगा हो चुका था, तनाव भी था और वहां से रेलगाड़ी चल रही थी दिल्ली के लिये, किस लिये ? कि अनुच्छेद-370 हटाओं संविधान से । इससे यह बात स्वयं ही स्पष्ट है कि एक तरफ तो सरकार की बाहर से सहायता भी करें और धारा-370 को हटा करके साम्प्रदायिक दंगे में खलल डालने का काम भी यह लोग करें । मैं इसलिये कह रहा था कि वहां नारे लग रहे थे, जिस पर वहां नजदीक रहने वाले कुछ मुसलमान लोगों ने उसका विरोध किया । मैं यह जानना चाहता हूं कि नारे लगाने से तो कोई विरोध इस तरह से होता नहीं । हां, अगर उत्तेजक नारे होंगे, बहुत ही राष्ट्र विरोधी नारे होंगे, दूसरे की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले नारे होंगे

तो निश्चित रूपसे दूसरे को तो आपत्ति होगी ही। इसलिये मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि वह नारे उत्तेजक थे या नहीं? और उत्तेजक थे तो किस प्रकार के नारे थे? इस बारे में मंत्री जी बयान देंगे।

दूसरी बात यह है कि जब पहले से ही तनाव था भड़ौच में, गाड़ी चल रही थी, सारी बात थी और जबकि इतने लोग वहां पर इकट्ठे थे तो गुजरात का एडमिनिस्ट्रेशन उस समय तक क्या कर रहा था? उसके पहले जब यह मालूम था कि इस तरह के नारे लगाते हुये जा रहे हैं, दिल्ली पहुंच रहे हैं तो कोई प्रिकॉशनरी मेजर क्यों नहीं पहले एडाप्ट किया ताकि इस तरह की घटना स्टेशन पर होने नहीं पाती?

तीसरी बात यह है कि जिस तरह से घटना घटी है उसके संबंध में मैं जानना चाहता हूं कि कितने लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज हुई? और जो लोग पकड़े गये तथा जो लोग अभी तक नहीं पकड़े जा सके हैं, उनके खिलाफ सरकार ने आज तक क्या कार्यवाही की ? इसमें निश्चित रूप से गुजरात की सरकार बिल्कुल फेल हुई है। इसलिये इस मामले पर मैं जानना चाहता हूं कि गुजरात की सरकार की तरफ से क्या कार्यवाही की गयी है?

आखिरी प्रश्न यह है कि मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि देश की सारी समस्याओं को ध्यान में रखते हुये कौन सा ऐसा कदम उठाने जा रहे हैं ताकि इस तरह की नारेबाजी पर प्रतिबंध लग सके और जो साम्प्रदायिकता फैलाने वाली ताकतें हैं उन पर रोक लग सके क्योंकि अगर यह ताकतें बढ़ती चली जायेंगी तो निश्चित रूप से देश के लिये खतरा होगा । इसलिये इसको रोकने के लिये भविष्य में इस तरह की घटनायें न हों तो ऐसा कौन सा कदम उठाने जा रहे हैं और क्या और भी पार्टियों से बातचीत करके उन नारों पर प्रतिबंध लगाने की बात सोच रहे हैं या और भी जो साम्प्रदायिक शक्तियां हैं उनके ऊपर भी बैन लगाने के बारे में सोच रहे हैं? दूसरे की भावनाओं को अगर आप उनको राष्ट्रविरोधी करार देने की बात करेंगे तो इस प्रश्न का उत्तर भी मैं माननीय मंत्री जी से स्पष्टीकरण के रूप में चाहता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Mr. Salaria. You promised that you will take half a minute.

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA (Jammu and Kashmir): I will be as short as possible.

The statement which has been made is unboubtedly ambiguous and it leaves much to be desired. Firstly it does not say, as was pointed out, what were the slogans being raised and what was the gravity of those slogans which gave provocation. Those who raised those slogans were obviously liable to be punished under the Indian Penal Code, but the statement makes it clear that the very person whose slogans led to scuffle and ultimately to a very unfortunate death of a citizen of our country has not been hauled up in any FIR. So, he, who invited and caused the trouble, has gone scot-free.

Secondly, this statement does not at all show whether Mr. Mathur's contention that the chain was pulled at the place where there was no station was correct or not. At least it makes clear only one thing that there was a halt of four minutes, which, according to the accusation made by Mr. Mathur, was not there. Therefore, the pulling of the chain had been done by somebody not from outside, but from inside the train. Therefore, the hon. Minister may be trying to catch hold of wrong persons. The persons who pulled the chain were actually persons who must have got down and started the trouble.

This is what must be gone into and found out as to who did it. Thirdly, what I want to submit before your honour is that...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): And that is the last one.

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA: Yes. I submit that this trouble which is going on in our country and leading to so many riots should be stopped. Is the Government thinking of banning such political parties or such associations which are creating communal disharmony or communal anti-pathy in a country where so many religious groups are living? It is high time in a country like India that such political parties or

[Shri Shabbir Ahmad Salaria]
such groups of people who advocate religious intolereance and anti-pathy between various sections of the society are banned; otherwise the future of our country will not be good and we will be at a loss. So these are my submissions and these require clarifications from the Minister and they may kindly be clarified.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): The last Member is Shri Gopalsinh G. Solanki. I am sure you will be very brief.

SHRI GOPALSINH G. SOLANKI (Gujarat): Sir, Palej railway station is between Baroda and Bharuch where minority people do not reside nearby the station. If they want to go to the station, it will take at least 7 to 8 minutes because I am well acquainted with that particular place. It is also reported in the hon. Minister's statement that the crowd had gathered there. Therefore, I would like to invite the particular attention of the hon. Minister to clarify this thing: when the train had started and when the chain pulling had taken place, from which compartment the chain pulling had taken place? This is the first point which the Minister may clarify.

Then, another thing is that if the crowd was more than 200 or 350, who started shouting the slogans? May I know from the Minister whether the FIR reveals this particular FIR fact or not? This needs to be clarified. That is all I wanted to know from the Minister. (Ends).

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): I have to make two observations

SHRI ANANTRAY DEVSHANKER DAVE (Gujarat): I have given my name and I will take only one minute.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): There will be another occasion to discuss this matter. Please cooperate with me. I am sure you are curious to listen to the Minister. I had accepted all the names and your name is not here. So please cooperate with us. Let us hear the Minister. I have to make two brief observations: (1) The matter is sensitive, although the whole statement relates to one incident. In the discussion people have made turns and twists in their comments. I only hope that the whole House agree with me that every citizen of India regardless of his community is a respectable citizen. there is no defference, no partiality, nothing of the sort and we expect that this cultural, social harmony will be maintained only if we have this kind of acceptance on unanimous basis.

The other part arises out of the clarification made by an hon. Member. If a word like "Muslims" in a sentence was avoidable or without basis, then, perhaps the Government could have done some forethought on that. I am sure the Minister will keep this in view.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: It should be removed.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): I think, what I have said is enough. The hon. Minister.

श्री अनन्तरे देवशंकर दवे: एक सब्मिशन चाहता हूं क्योंकि मेरे स्टेट का सवाल है। एक बात यह कहना चाहता हूं आपके माध्यम से कि 200 लोग स्टेशन पर दाखिल हुए तो उन्होंने प्लेटफार्म टिकट लिया या नहीं और **(व्यवधान)**

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इंजिन पर ये लोग खड़े हो गये और बन्दूक लेकर ड्राइवर को ट्रेन रोकने के लिए कहा गया, यह जानकारी मिनिस्टर साहब के पास है या नहीं? तीसरी बात मैं यह पूछता हूं कि आज तक कितने हथियार वहां पकड़े गये हैं जो उनके पास थे, उन पर क्या सरकार ने कब्जा किया है?

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): दवे साहब, आपकी जानकारी के लिए यह बता दूं कि आपका नाम पुकारा गया था। आपने बुनियादी रूप से जिज्ञासा जाहिर की है, लेकिन बाद में आपकी दिलचस्पी नहीं रही।

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं तो सबसे पहले यह कहना चाहता हूं कि जिस व्यक्ति की हत्या हुई सदन को उस व्यक्ति, मासूम की हत्या के

साथ होना चाहिए। वह चाहे किसी भी बिरादरी, धर्म और समाज का रहा हो और हम उसकी हत्या से उभरे हुए सवालों पर जवाब देने के लिए खड़े हुए हैं। लेकिन जो सवाल माननीय सदस्यों ने उठाये हैं वे सवाल कहीं न कहीं साम्प्रदायिकता की भावना से हैं। साम्प्रदायिकता की भावना को कैसे समाज से खत्म किया जाये, यह आज देश की 80 करोड़ जनता के समाने चुनौती का सवाल है, पूरे सदन के लिए चुनौती का सवाल है। मैं मानता हूं कि इस बयान में एक सम्प्रदाय का नाम लिया गया है। वह कुछ इसलिए नहीं लिया गया है कि उस सम्प्रदाय को हम नीचा दिखाना चाहते हैं, लेकिन हकीकत हमारे सामने आई तो उस हकीकत को अच्छी नियत से हम सदन के सामने रखना चाहते थे। उसके पीछे जरा भी ऐसी मंशा नहीं थी कि एक सम्प्रदाय को हम नीचा दिखाकर दूसरे को ऊंचा उठाना चाहते हैं। इसलिए कहीं ऐसा लगता हो, हमारी वाणी में कहीं आपको बू आती हो तो मैं उसके लिए किसी हद तक रिग्रेट करने के लिए तैयार हूं। लेकिन हकीकत जो हमारे सामने है, जो खबर आई है उस खबर के आधार पर यह घटना घटी।

SHRI VISHVJIT P. SINGH: They will not be relenting, Mr. Vice-Chairman, Sir. He is qualifying his regret. He is still not admitting. *(Interruptions)*. There was no need to have that word. *(Interruptions)*

SHRI SUBODH KANT SAHAY: I have spent three years in jail and then I have come here. I know much more than you. *(Interruptions)*.

हमने नये सिरे से अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया है। हम आपकी भावना के साथ और सदन की भावना के साथ हैं। जो फैक्ट हमारे सामने आये हैं उसको लेकर हम आपके सामने रखना चाहते हैं। दूसरा हमने कहीं यह नहीं कहा कि दो सौ आदमी जमा थे वे मुसलमान ही जमा थे। वे प्लेटफार्म पर जमा होने वाले लोग थे।

श्री विश्वजित पृथ्वीजित सिंह: मुसलमान के बारे में कहने से आपका क्या मतलब है? यह सेन्टेन्स आपने क्यों रखा, उसका क्या मतलब है?

श्री सुबोध कांत सहाय: आयन्दा से हम आपकी भावनाओं का ख्याल रखेंगे।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): I think that matter is over. *(Interruptions)*.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Sir, the word 'local Muslims' may be deleted and the statement may be taken as amended. *(Interruptions)*

SHRI M.M. JACOB: Sir, I want to submit something. My humble submission is that the word 'local Muslims' may be deleted from the statement. Otherwise, it will be perpetually in the record of the House. *(Interruptions)*.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: It has been accepted in principle that we do not refer to the communities by name and therefore this particular word may be deleted.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: The facts will be twisted for nothing. They should go on record. *(Interruptions)*.

SHRI M.M. JACOB: He is not sure whether all the people assembled there were Muslims. He himself said this.

In fact, he is not sure whether all the people assembled were Muslims. He himself said he is not sure whether all the people assembled were Muslims. Has he got the statistics? *(Interruptions)*.

SHRI VISHVJIT P. SINGH: Now that the BJP has given direction, I am quite sure that the Minister will not withdraw these words. *(Interruptions)*.

SHRI KAMAL MORARKA: Please listen to me for a minute. *(Interruptions)*. I request my friend Vishvjitji. Mr. Satya Pal Malik has very gracefully said that it would have been much better if the statement had been worded in a different way. *(Interruptions)*. I don't need half a dozen interpreters. Both my English and Hindi are all right. I am making a request to Mr. Vishvjit Singh. The statement as it is on record. What Mr. Satya Pal Malik said is also on record and what Mr. Subodh Kant Sahay says is also on record. There is no intention to downgrade any community or cast aspersions. Let the matter end there *(Interruptions)*.

SHRI M.M. JACOB: Mr. Morarka, in the history of this Parliament, we have never used such a sentence denigrating a

[Shri M.M. Jacob]

community as such. That is why the objection... *(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF CHANDRESH P. THAKUR): Hon. Members.... *(Interruptions)*.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: Such sort of words should not be allowed to go to the people because it will create tension.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदय, आज से दो दिन पहले जब फतेहपुर की घटना पर मैंने जोर दिया तो उस तरफ से यह आवाज उठी कि सारे ठाकुर समुदाय पर आरोप न लगाये जाएं। आज सारे मुसलमान समुदाय, स्टेशन के पास रहने वाला जो समुदाय है उनके ऊपर आरोप लगाये जा रहे हैं ।...(**व्यवधान**)... मैं चाहता हूं कि इसको विड्रा क्रिया जाय ...(**वयवधान**)

SHRI KAMAL MORARKA: There is misunderstanding.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: कोई आरोप नहीं लगाया जा रहा है।...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): अंसारी साहब आप बैठ जाइये।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: ...और अभी अभी पार्लियामेंटरी अफेयर्स के मिनिस्टर ने कहा कि यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है अगर यह ऐसे लिखा गया है। अगर ऐसा नहीं लिखा गया होता तो बहुत अच्छा होता। पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर गृह मंत्री के स्टेटमेंट को ही सेंसर कर रहे हैं तो क्यों नहीं गृह मंत्री एक फ्रेश स्टेटमेंट लाकर उसको पेश कर देते और बयान दे देते? ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): अहलुवालिया जी आप बैठिये, आप मेरी बात सुनिये। ...(**व्यवधान**)...

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी (उत्तर प्रदेश): यह ...(**व्यवधान**)... उन्होंने नफरत भरे नारे लगाये ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): अंसारी साहब आप बैठ जाइये।

Nothing will go on record. These things will not go on record... *(Interruptions)*... Please just listen.

SHRI MOHAMMED AMIN ANSARI:*

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Please control the Members. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN: I think we cannot function *(Interruptions)*

These things will not go on record.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY:

SHRI S.S. AHLUWALIA:*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Please sit down, all of you *(Interruptions)*

श्री राम नरेश यादव: महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। ....(**व्यवधान**)....

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): यादव जी का प्वाइंट आफ आर्डर है।...(**व्यवधान**) ...यह व्यवस्था का प्रश्न उठा रहे हैं।

श्री राम नरेश यादव: महोदय, यह सदन बहुत ही सर्वोच्च है और यहां पर जो बात आती है वह जनता के बीच में जाती है। ऐसे समय में इस सदन में और इस सदन के माध्यम से कोई ऐसी बात जनता के बीच मे नहीं जानी चाहिये जिससे यह बात स्पष्ट हो कि सदन मे बयान के जरिये किसी एक विशेष संप्रदाय के लोगों को साम्प्रदायिक कहा जाये, चाहे वे मुस्लिम हों और चाहे हिन्दू हों। अगर उनके नाम के आधार पर किसी सम्प्रदाय विशेष का नाम किसी बयान में आता है जिससे जनता के मन में यह भावना जागे कि सदन के अन्दर भी इस तरह की बात होती है, मैं आपके माध्यम से व्यवस्था चाहता हूं इस तरह से जब बयान देंगे और इस तरह की भावना जनता के बीच में जाएगी तो क्या साम्प्रदायिकता का समावेश उस में नहीं होगा? इससे बचने के लिए, आप सरक्षक हैं, मै आपके माध्यम से व्यवस्था चाहता हूं क्या सचमुच में यह साम्प्रदायिक है या नहीं है इस तरह की बात करना। मैं चाहता हूं आप इस पर अपनी व्यवस्था दें और इसको निकालने का काम करें।

उपसभाध्यक्ष: श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: उपसभाध्यक्ष महोदय, (**व्यवधान**)

SHRI M.M. JACOB: Mr. Vice-Chairman, Sir,... *(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF CHANDRESH P. THAKUR): I have already asked Mr. Vajpayee to speak *(Interruptions)*

SHRI M.M. JACOB: I propose that the words "some muslims living close to

*Not recorded

the Railway Station" be taken off and in their place, "some local people living close to the Railway Station" be added. *(Interruptions)* ...

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: I second that motion, Sir. *(Interruptions)* ...

SHRI M.M. JACOB: Sir, with your permission I move the motion that the amendment, as suggested above, may be accepted *(Interruptions)* ...

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: How can you entertain such motions? ...*(Interruptions)* Sir, the motion has to come under the rules. *(Interruptions)*...This is not the way to move any motion. You cannot twist the rules like that. ...*(Interruptions)*

SHRI M.M. JACOB: No, no. You cannot angry with us. ...*(Interruptions)* ...

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: You allow me to say what I want to say. ...*(Interruptions)* ...

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी: इन्होंने बी०जे०पी० ने ऐसा माहौल पैदा किया है मुल्क में **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): आप बैठ जाइये। **(व्यवधान)**

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी: वी०एच०पी० बी०जे०पी० आदि इन लोगों से मुल्क को खतरा है **(व्यवधान)** ऐसे लोगों को फौरन जेल भेज दिया जाए **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): आप बैठ जाइये वाजपेयी जी, आपसे मेरा अनुरोध है कि आप अपनी वयस्कता और सीनियर्टी का सहयोग देंगे। यह नाजुक मुद्दा है। आप इंटरवीन कर रहे हैं इसलिए इस को ध्यान में रख कर के जो आपको कहना हो कहिये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: उपसभाध्यक्ष महोदय, इस सदन में तो कुछ कहना ही मुश्किल हो गया है। **(व्यवधान)** आप ठीक कह रहे हैं, यह मामला नाजुक है लेकिन इस नाजुक मसले पर जिस तरह की बातें कही गई है वह कोई वक्त की नज़ाकत को ध्यान मे रख कर के नहीं कही गई हैं।

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): आप न कहें।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अच्छा चलिये, आप मेरे से शुरू करना चाहते हैं तो मुझे बड़ी खुशी है। मैं नहीं जानता मन्त्री महोदय के सामने कौन से तथ्य थे जिनके आधार पर यह बयान उन्होंने तैयार किया है। उस बयान में एक शब्द पर आपत्ति है। सचमुच में वह आपत्ति तो भारतीय जनता पार्टी की ओर से होनी चाहिये थी। जिस वाक्य पर आप आपत्ति कर रहे हैं उस में से भाव यह निकलता है कि भारतीय जनता पार्टी वालों ने ऐसे नारे लगाए।

कि स्थानीय मुसलमानों का एक गुट था उसको वे नारे पसंद नहीं आये। अब यह शब्दावली जरा देखिए। "The BJP/RSS volunteers in the train were shouting slogans."

यह ठीक है कि नारे तो लगते हैं। आखिर राजनैतिक *कार्यकर्ता थे, रैली में भाग लेने के लिए आ रहे थे। हम* कोई भजन करते हुए नहीं आ रहे थे, हमें नारे लगाने थे। जब कांग्रेस वाले आते हैं तो वे भी नारे लगाते हैं। क्या बी०जे०पी वालों का नारे लगाना भी गुनाह है। ...**(व्यवधान)** अब देखिए, फिर बोलने लगे। मुझे सदन में बोलने की इजाजत होगी या नहीं, होगी ...**(व्यवधान)** उपसभाध्यक्ष महोदय, यह नहीं चलेगा ...**(व्यवधान)** एक हद होती है। माइनारिटी मेजारिटी का सवाल नहीं है ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): आप बोलिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: मै इस सदन में कभी किसी को नहीं टोकता। मैं और मेरा दल कुछ मर्यादाओं से बंधा हुआ है। मगर मैं आशा करता हूं कि अगर मैं बोलता हूं तो मुझे सुना तो जाये। मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि यह जो वाक्य है यह तो भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं पर आरोप लगाता है। हमने इस पर आपत्ति नहीं की क्योंकि हमें पता नहीं कि क्या नारे लगे थे। नारे अगर आपत्तिजनक थे तो गलत थे। मगर न हमें मालूम है कि कौन से नारे लगे, न आपको मालूम है कि कौन से नारे लगे। मगर यह बात मंत्री महोदय ने कही है कि नारे ऐसे थे जिससे स्थानीय मुसलमानों को ऐतराज हुआ, और देखिए "एपेरेंटली" "लोकल मुस्लिम" यह बड़ा इनोसेंट है। अगर मंत्री महोदय "मुस्लिम" शब्द नहीं लाते तो हम नहीं कहते कि आप इसमें "मुस्लिम" रख दीजिए। लेकिन आज जो तरीका अपनाया जा रहा है, सरकार का यह वक्तव्य है, सरकार के वक्तव्य में अमेंडमेंट कर दिया जाये। आज अगर यह

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

सिस्टम चला देंगे, मंत्री महोदय स्वयं अमेंडमेंट कर दें मुझे आपत्ति नहीं है और श्री सत्यपाल मलिक ने जो कुछ कहा उसके बाद यह विवाद खत्म हो जाना चाहिए था, लेकिन ये कुछ लोग यह विवाद खत्म नहीं करना चाहते हैं, क्षमा कीजिए, इसलिए यह मांग की जा रही है। जैकब साहब मंत्री रह चुके हैं कोई मंत्री अपने वक्तव्य में इस तरह से अमेंडमेंट करना स्वीकार कर सकता है। अगर करेक्शन होना था तो सत्यपाल मलिक ने कर दिया।

SHRI M.M. JACOB: He can accept it. If he is convinced, he can accept it.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: नहीं तो क्या आप इस पर वोट करेंगे और अगर उन्होंने नहीं माना तो वक्तव्य में अमेंडमेंट करना तो आप यह फतवा देंगे कि यह सरकार मुसलमान विरोधी है ..**(व्यवधान)** यह खेल हो रहा। ..**(व्यवधान)** मैं फिर कह रहा हूं कि उस वाक्य को फिर से पढ़ लीजिए।

श्री कमल मोरारका: वे नहीं समझेंगे।...**व्यवधान**

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अगर आरोप है तो भारतीय जनता पार्टी वालों पर है कि उन्होंने ऐसे आरोप लगाये जिससे मुसलमान भड़के...**(व्यवधान)** मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

SHRI A.G. KULKARNI: Sir, I am on a point of order.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: I am not yielding; let me complete. अच्छा आप बोलिए।

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी (महाराष्ट्र): क्या आपका खत्म हो गया। I will speak after you have finished.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: आप बुजुर्ग हैं आपके सामने में कैसे खड़ा हो सकता हूं ...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय का वक्तव्य कुछ तथ्यों पर आधारित होगा मैं यह मानकर चलता हूं। आखिर वहां जो कुछ हुआ, वह एक साम्प्रदायिक स्वरूप का उपद्रव था यह तो सही बात है। इस तथ्य को तो आप झुठला नहीं सकते। यह बात कही जा रही है कि इस तरह के नारे लगे, उस तरह के नारे लगे। उससे साम्प्रदायिक दरार तो साफ है। अब यह बात अलग है कि मंत्री महोदय को लोकल मुस्लिम कहना चाहिए या लोकल पीपुल कहना चाहिए था। मगर इसके बारे में तो मंत्री महोदय को फैसला करना है। मैं एक डर की बात कह रहा हूं कि सरकारी वक्तव्य में संशोधन करने की प्रक्रिया अगर इस सदन में आरम्भ हो गयी और उसके साथ साम्प्रदायिकता का नाजुक मामला अगर जुड़ गया तो इसका कहां अंत होगा इस पर सारा सदन विचार कर ले। मंत्री महोदय जो भी संशोधन करें मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

SHRI A.G. KULKARNI: Sir, my point of order is this and I want your decision on this. May be, it is the first time you are sitting in the Chair as Vice-Chairman...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): If you take pre-lunch and post-lunch, this is the second time.

SHRI A.G. KULKARNI: You are such a kind gentleman. But when my friend, a previous Minister and present colleague, Mr. Jacob, moved an amendment, objection was taken by Vajpayeeji...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): I don't think he moved any amendment.

SHRI KAMAL MORARKA: This is not a Bill.

SHRI A.G. KULKARNI: Please allow me to complete. At the outset you have to consider as the Vice-Chairman presiding over the deliberations of this House now, the statement is totally ill-drafted, mischievous; it might have been drafted by some bureaucrat...

SHRI KAMAL MORARKA: Is he on a point of order or is he making a speech? This is not a point of order. (*interruptions*) We don't want your certificates of secularism.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Mr. Kulkarni, what is your point of order?

SHRI A.G. KULKARNI: My point of order is that the statement is not only very poorly drafted but mischievously drafted. I have seen in my experience during my long tenure in this House, if you read this statement, it says: "The train was to halt..."

श्री सत्य प्रकाश मालवीय: उपसभाध्यक्ष जी, यह प्वाइंट आफ आर्डर कितनी देर तक होगा? चार मिनट तो हो गये हैं।

SHRI A.G. KULKARNI: Let me explain. Unless I explain my point how can I say what my point of order is. Why are you so much exercised? Sir, the train was expected to halt there for four minutes and it is reported here that somebody raised slogans against Muslims and the local population. Taking a view of the communication between a station and the local population and the time involved, it is not possible at all. So this must be a cooked up matter to malign the Muslims. My point of order is, as Jacobji has rightly suggested, this sentence must be withdrawn. And there is a provision. I am not involving Vajpayeeji nor am I blaming the BJP or anybody. But the point is these two sentences are totally frivolous and these should not go on record. And it is the Government who must be responsible for drafting this statement.

SHRI KAMAL MORARKA: Is it a point of order? What is he trying to say?

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: He is exposing the irresponsibility of the Government.

SHRI KAMAL MORARKA: We have seen how responsible your Government was. People have thrown it out.

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): अंसारी साहब, आपसे मेरी विनती है, आप बैठिए।...**(व्यवधान)**

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी: मान्यवर, यह पूरे हिन्दुस्तान के मुसलमान नहीं दुनिया के अमन-पसंद लोगों पर इल्जाम लगाया है...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): आप बैठिए, आप बैठ जाएं।...**(व्यवधान)**

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी: अमन पसंद लोगों को उन्होंने जलील किया है...**(व्यवधान)** हिन्दुओं को और मुसलमानों को...**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): अंसारी साहब, आपका सहयोग चाहिए, आप बैठ जाइए, प्लीज़।...**(व्यवधान)** दिलों में नफरत की आग पैदा की है।

Mr. Kulkarni, please complete quickly.

SHRI A.G. KULKARNI: Mr. Vice-Chairman, Sir, I am appealing to you that if it is possible under the Rules, you as the Chairman should please drop out these two sentences and accept Mr. Jacob's suggestion for amendment *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF CHANDRESH P. THAKUR): Let me make one submission.

The matter is certainly very sensitive and all the discussions and the tempers which have been flowing on both sides were avoidable. I am sure the Minister has heard the House and he has assessed the spirit of the discussion and reaction. Keeping in view his own colleague's statement, Mr. Malik's statement, earlier, I leave it to the judgement of the Minister to respond the way he thinks is appropriate and which will help in cooling the tempers in this House and which will transmit a very secular message to the country at large *(Interruptions)*

श्री सुबोध कांत सहाय: धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं जैसा कि कह रहा था कि सदन की भावना जो देश में सांप्रदायिकता के सवाल को ले करके ज्यादा गंभीर और चिंतित है, उस दृष्टिकोण को देखते हुए और उस भावना से पूरी तरह से सहमति व्यक्त करते हुए हमारे कोलीग भाई सत्यपाल मलिक जी ने अपनी भावना रखी, लेकिन हम जितने सारे सवाल हमारे सारे माननीय सदस्यों ने उठाए हैं उन सारे सवाल

[श्री सुबोध कांत सहाय]

के जवाब अभी की स्थिति में मैं समझता हूं कि जो आज की भावना है, क्योंकि गुजरात सरकार ने एक हाई लैवल इन्क्वायरी सैट अप किया है, आई०जी०, पुलिस के नेतृत्व में और मैं यह कह सकता हूं कि आज के वक्त में कि उस इन्क्वायरी की रिपोर्ट जितनी जल्द से जल्द हो, एक सप्ताह के अन्दर अगर हो, उस इन्क्वायरी को एक सप्ताह के अन्दर पूरा करके जितने सारे बयान यहां पर दिए गए हैं उन सारे बिंदुओं के ऊपर जांच करा करके अगर...(व्यवधान)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: आप बात को गोल मत करिए...(व्यवधान) आप कर क्या रहे हैं वह बताइये? महोदय, बात को गोल करने की कोशिश चल रही है।

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने कभी नहीं कहा और हमारे इस वक्तव्य में कहीं नहीं लिखा हुआ है कि मुसलमानों ने हमला किया, कहीं हमने नहीं कहा है यह और यह हिन्दुस्तान का मुसलमान उतना ही ज्यादा सैकुलर है जितना इस देश के दूसरे जाति-पाति के लोग सैकुलर है और उसके लिए हमारी सरकार, हमारी पार्टी गर्व करती है। लेकिन इस सवाल पर कोई देश में राजनीति करना चाहता है, घिनौनी राजनीति करना चाहता है तो यह सरकार उसको कभी बर्दाश्त नहीं करेगी। कभी मौका नहीं देगी। इसलिए हमने जो सच था सामने रखा और हमारे साथी सत्यपाल मलिक जी ने जो भावना रखी है उसके साथ मैं हूं, इतना ही मैं कहना चाहता हूं कि सरकार पूरे तथ्यों के साथ सदन के सामने आएगी...(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): जरूर। प्लीज़, बैठ जाइये।...(व्यवधान)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: उपसभाध्यक्ष महोदय, इस सदन को पूरी तरह गुमराह किया गया है।

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): अहलुवालिया जी, आप बैठिए। आप बैठ जाइये। ...(व्यवधान)

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश): महोदय...(व्यवधान) मंत्री जी जिस जिद पर अड़े हुए हैं...(व्यवधान) वह बिल्कुल गैर-जिम्मेदाराना है।

उपसभाध्यक्ष (प्रो० चन्द्रेश पी० ठाकुर): आप बैठिए।

डा० रत्नाकर पाण्डेय: ...भड़काने की साजिश गृह मंत्री जी कर रहे हैं। ...(व्यवधान)

SHRI DIPEN GHOSH (West Bengal): It is going on the whole day. It cannot be allowed.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदय, इस मुल्क में सांप्रदायिक दंगा होता है तो ये मंत्री इस के लिए जिम्मेदार हैं। महोदय, इस तरह से सदन में गैर जिम्मेदाराना स्टेटमेंट लेकर आना...(व्यवधान)...गलत बात है।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): The Minister, in his final words, has said that he fully associates himself with the spirit of the statement made by his colleague, Mr. Malik.

SHRI DIPEN GHOSH: Mr. Vice-Chairman, Sir, I am on a point of order. The Minister has made a *suo motu* statement. Only in this House we have got the benefit of seeking clarifications. This benefit is not extended to our colleagues in the other House. Our Members have sought clarifications to the largest possible extent and the Minister has replied to the clarifications. The reply may not satisfy or may not be to the liking of some Members. But once the Minister has given the reply, it is over. *(Interruptions)* If some Members still remain unsatisfied, the procedure is that the Members are entitled to raise this issue in any other form of discussion. There is Calling Attention Motion and there is Short Duration Discussion. I seek your ruling. The matter is over and you pass on to the next item on the agenda. The Members are free to raise this issue in any other form.

(Interruptions)

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Enough time has been spent on this.

(Interruptions)

(The Deputy Chairman in the Chair)

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदया, ...(व्यवधान)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seats first.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: उपसभापति महोदया, मैं ...(व्यवधान)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I said, please sit down. I request you to please take your seat. Hon. Members, I left a Professor to you, not to behave like this. Rather on the first day, you are treating him like this, next time he will never come to help me out and sit in the Chair. So, let us cool it. What is the problem?

SHRI DIPEN GHOSH: There is no problem.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदया, ...(व्यवधान)...

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी: महोदया, हम यह ...(व्यवधान)... कहना चाहते हैं कि मुस्लिम शब्द निकाला जाए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Not all at a time. Please take your seats. *(Interruptions)* अंसारी साहब आप कृपया अपनी जगह पर बैठ जाइए। When I am standing, please sit down. *(Interruptions)* Nothing will go on record until and unless you take my permission. Cool it. Cool it. अंसारी साहब, आप बैठ जाइए। मुझे कुछ कहना है। सुबह से हम लोगों ने दो स्टेटमैंट्स पर काफी चर्चा की। हमारा लिस्टिड बिजनेस है, स्पेशल मैंशन्स है, पंजाब का बहुत जरुरी है। 6.00 बजे हाऊस एडजार्न होता है। I am taking the Special Mentions—Shri Anand Prakash Gautam.

(Interruptions)

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam, you read the statement.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have read the statement. Now take your seat. *(Interruptions)* Please take your seats. You cannot hold the House to ransom.

SHRI M.M. JACOB: Madam, may I make a submission?

(Interruptions)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seat. Your Whip is making a submission.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Madam, I have a submission...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will listen to you also. I will listen to everyone patiently. गुरुदास जी, जरा शांति से बैठ जाइए।

SHRI M.M. JACOB: Madam Deputy Chairman...

SHRI DIPEN GHOSH: No submission about that statement. Then I should also be allowed to make a submission.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I allowed him. You take your seat. I will allow you also. I will allow one person from here and one person from there. Either you speak or he speaks and one person will speak.

SHRI M.M. JACOB: Madam Deputy Chairman, when you came to the House, you asked a question as to what the matter is. Madam, the matter is that the Minister made a statement, and clarifications were sought. *(Interruptions)*

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: No, no. The matter is closed.

उपसभापति: आप बैठ जाइए। मैंने क्या कहा, आपने सुना नहीं है?

Have trust in the Chair. At least trust me.

SHRI M.M. JACOB: In the rich and great tradition of this House, we thought of defusing the situation at least in this House and not to show acrimony towards each other or fight against each other in this House. Our intention was to see that this House established a good tradition and a healthy tradition. With this intention...*(Interruptions)* Please allow me to speak. When we read the statement and heard the Minister, we found that one sentence will create a lot of misunderstanding. On one side, the sentence says that some RSS/BJP volunteers in the train were shouting slogans. That means, they were shouting slogans against somebody. And the same sentence also says that the local Muslims living close to the station objected to it. That means, you are deliberately inviting two communities for confrontation

[Shri M.M. Jacob]

outside. So, we said, please for heaven's sake, try to withdraw that sentence. Why should RSS and BJP come to shout slogans and somebody object to it? And this goes out of this House as a confrontation between two warring groups. We wanted to avoid that feeling.

That was the reason why we wanted that this sentence should be eliminated. There is no question of any acrimony. I hope, Mr. Vajpayee will agree with me that this sentence should be withdrawn voluntarily by the Minister.

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभापति महोदया, ये कह रहे थे कि...आप कृपया बैठ जाइए, मैं बता रहा हूं...

SHRI M.M. JACOB: Thank you very much, Mr. Minister. It is for the Chair to ask me to sit down. Of course, you are a new Minister. I respect you. I accept your request. This is all I wanted to say.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: महोदया, मैं मंत्री महोदय से यह पूछना चाहता हूं कि जो बयान उन्होंने इस सदन में दिया है क्या वही बयान उन्होंने दूसरे सदन में भी दिया था? क्या इस बयान पर वहां कोई आपत्ति हुई थी? क्या यहां जो ये सारे आरोप लगाए जा रहे हैं, वे दूसरे सदन में भी लगाए गए थे?

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभापति महोदया, मेरे ख्याल से...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, either Mr. Gurudas Das Gupta or you can speak, Mr. Dipen Ghosh.

SHRI DIPEN GHOSH: It is not a question of one or two, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I do not want a debate. I allowed one Member from that side. I am allowing one from this side.

SHRI DIPEN GHOSH: The question is, the hon. Minister made a *suo motu* statement. I, personally, did not like certain words which are used in the statement. Similarly, some other Members have not liked it. In the Rajya Sabha, Members have the benefit of seeking clarifications but in the other House, our colleagues do not have such a benefit. While seeking clarifications, many Members have pointed out that certain words should not have been used. I fully appreciate. I appreciate their feeling. I talked to the Minister. I talked to the other Ministers also. The Minister of State for Parliamentary Affairs, Mr. Satya Pal Malik, has also made a statement agreeing, in principle, that it should have been avoided. The hon. Minister, while replying, fully shared the views expressed by the Minister of State for Parliamentary Affairs, Mr. Satya Pal Malik.

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA: He diluted it. *(Interruptions)*

SHRI DIPEN GHOSH: Madam Deputy Chairman, you have been presiding over this House for the last many years. You have seen in the past many *suo motu* statements being made and many clarifications being sought. It does not happen every time that all the clarifications sought by hon. Members have been replied to, to the satisfaction of the Members concerned.

SHRI AJIT P.K. JOGI (Madhya Pradesh): The word 'Muslims' was never used. *(Interruptions)*

SHRI DIPEN GHOSH: Don't try to teach me — a person belonging to the C.P.I.(M) — secularism. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have said that nobody should interrupt. I request Members. Please do not interrupt. Do not try to show your eagerness just now when others are speaking. I have allowed. This is enough. Let us not debate it any longer.

SHRI DIPEN GHOSH: Madam, the Minister's reply may not to be my liking. I may remain unsatisfied. But what happens? After the Minister's reply, whether it is good, bad or indifferent, if a

Member remains unsatisfied, he is entitled to raise the same issue for discussion in any shape allowed under the rules, either by way of a Calling-Attention Motion or a Short-Duration Discussion. But if the issue takes the whole day, even after the Minister's reply, I think...

SHRI S.S. AHLUWALIA: What sort of reply it was?

SHRI DIPEN GHOSH: If the issue takes the whole day, it is a sort of interference with the normal functioning of the House. I would appeal, through you, if Dr. Ratnakar Pandey or Mr. Ahluwalia or Mr. Jacob or any other Member from that side wants to raise this issue in the shape of a Calling-Attention Motion or a Short-Duration Discussion, they can do so. In the Business Advisory Committee meeting held yesterday, we agreed to have a short-duration discussion on the communal situation in the country. We can also raise the specific issue in the shape of a Calling-Attention Motion. I will support that. But let us not hold the whole House to ransom in this manner. Whatever communal passion was not there outside is sought to be inducted here. This is wrong. Some Members have said पूरी दुनिया के मुस्लिमों के ऊपर आक्रमण हुआ है, यह गलत है।

Am I to believe...

SHRI VISHVJIT P. SINGH: It will be too late if it is not done today.

SHRI DIPEN GHOSH: You are inducing communalism here. *(interruptions)*.

उपसभापति: अब आप लोग बैठ जाइये। प्लीज टेक यौर सीट, जस्ट ए मिनिट। रत्नाकार जी बैठ जाइये। अपनी जगह पर तशरीफ रखिये। अंसारी साहब बैठ जाइये।

I have heard Mr. Jacob, I have heard Mr. Dipen Ghosh and the intervention of Mr. Atal Bihari Vajpayee. We have a convention in this House... *(Interruptions)*. हाथ न उठाइये, इसलिये मैं यह मैटर खत्म करना चाह रही हूं, उसको बढ़ाना नहीं है मेरा काम। कोई भी हाउस के अन्दर गड़बड़ हो उसको खत्म करना, हर मेम्बर को सैटिसफाई करना मेरी जिम्मेदारी है...**(व्यवधान)** मंत्री ने अगर आपके सैटिस्फैक्शन पर जवाब नहीं दिया है तो...**(व्यवधान)**

Now you do not want me to speak. I say, you take your seat. *(Interruptions)*. If Members are not satisfied, there are many devices available to the Members to raise their issue in any other form. You are free to do that. The Minister has made a statement. If you are not satisfied, nothing can be done in this.

Now I am taking special mentions.

SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR (Uttar Pradesh): Am I permitted to say one word? मोहतरमा मैंने अभी-अभी देखा कि इसमें जो लफ्ज इस्तेमाल किया गया है...**(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let me hear. Until and unless I hear him, I cannot give my opinion. He is seeking my permisison. I have a right to allow him. Now, do not tell me anything. Let him say.

SHRI V. GOPALSAMY: But you called 'special mentions'.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I say so many things, but you do many other things.

श्री माखन लाल फोतेदार: बदकिस्मती से यह लफ्ज नहीं होना चाहिये। मुझे इस बात का अहसास भी है कि सरकार के पार्लियामेंट्री एफेयर्स मिनिस्टर ने खुद इस बात का...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: जाकर देखो हाउस में क्या कर रहे थे।

श्री माखन लाल फोतेदार: मैं इस पर भी आ जाऊंगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: तो हम क्या करें।

श्री माखन लाल फोतेदार: उन्होंने इस बात का तसलीम किया है कि... **(व्यवधान)**

Have patience. Please listen with patience. Do not break the heads. Heads

[श्री माखन लाल फोतेदार]

should meet. *(Interruptions).* In this Council of States heads should meet, heads should break. सवाल यह है कि यह मसला गुजरात सरकार में या गुजरात की धरती पर हुआ है। इस बात का हमें अहसास है कि गुजरात की सरकार एक लंगड़ी सरकार है। वहां की सरकार जो जनता दल की है वह बी०जे०पी० के आसरे वहां जिन्दा हैं। शायद इस वजह से सरकार ने यह मुस्लिम वर्ड रखा होगा। लेकिन...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: अब आप देखिये।

THE DEPUTY CHAIRMAN: One Member is making a statment Please have patience to hear him.

श्री माखन लाल फोतेदार: मैं आप पर भी आ जाऊंगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: मेरे ऊपर मत आइये।

श्री माखन लाल फोतेदार: आपसे मैं यह कहता हूं कि यह हुकूमत थोड़ी है, यह तो अटल जी की सरकार है। मैं अटल जी से ही गुजारिश करूंगा कि सरकार को यह हिदायत दें कि मुस्लिम वर्ड रखने से यहां रस्साकशी ज्यादा बढ़ सकती है। अगर आप इनको नसीहत करें तो यह सरकार यह माने कि हमें कोई एतराज नहीं है। लेकिन चूंकि अपोजिशन ने इस बात को उठाया है और यह बात रिकार्ड पर आयी है और अगर सरकार यह वर्ड वापिस लेने के लिये तैयार नहीं है तो सरकार की यह मर्जी है। हमारा यह फर्ज था...

THE DEPUTY CHAIRMAN: आपने अपनी बात कह दी, आपकी पार्टी की तरफ...

I am not allowing anybody any more. The matter is closed. If members are not statisfied, they can go and ask the Chairman. They can do that, but I am not allowing any more on this.

Shri Anand Prakash Gautam ... *(Interruptions)*

SHRI V. GOPALSAMY: You cannot dictate like this...

डा० रत्नाकर पाण्डेय: यह आप को खुश करने का सरकार का वक्तव्य है...**(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now nothing will go on record. After this nothing is going on record. Let them speak. Nothing is going on record...आप बैठ जाइये, मैटर खत्म हो गया।

Shri Anand Prakash Gautam... I say Mr. Ahluwalia, this is my last request to you. Please take your seat. Nothing is going on record. There is no point in saying it. Please take your seat. The matter is closed. I am not allowing any body. Special Mentions. I am not allowing...आप बैठ जाइये। मसले को बढ़ाना नहीं है कम करना है। **(व्यवधान)** आप तशरीफ रखिये।

I say, Please take your seats. You don't listen to the Chair. That is very unruly...Please take your seats...I will not allow. Call Mr. Jacob. I am adjourning the House. If the Members are not interested, I will adjourn the House. I will adjourn the House. If the Members are not listening to me, I will adjourn the House...If you do not listen to me, I will adjourn the House...Please take your seats.

SHRI V. GOPALSAMY: Madam, there is no need to adjourn the House. We are making a request to you. *(Interruptions)*

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभापति महोदया, जो लोग इस बात को कह रहे हैं वे अगर सही रूप में उससे कंसर्न हैं, ईमानदार हैं, तो मैं इतना हाउस को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भविष्य में शब्दों के चयन में हम पूरी तरह से सावधानी बरतेंगे... **(व्यवधान)**

SHRI S.S. AHLUWALIA: They are distorting everything, they are distorting the proceedings of this House. ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Special Mentions. Shri Anand Prakash Gautam.

SHRI S.S. AHLUWALIA: No. No, Madam. This is not the way ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seat. I told you that you have a right to speak to the Chairman and ask for another discussion. We have had enough discussion on this. I am not allowing you ...*(Interruptions)*...

DR. ABRAR AHMED KHAN: Point of order.

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is no point of order ...*(Interruptions)*...

आप इस तरह से खिलवाड़ मत करिये ...(व्यवधान)।

SHRI S.S. AHLUWALIA: Madam ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Do not think you have a loud voice and you can hold the House to ransom. Take your seat. I will not allow you to speak. Please take your seat. ...*(Interruptions)*...Special Mentions. Miss Saroj Khaparde...Shri Shiv Pratap Mishra....Shrimati Kamala Sinha... *(Interruptions)*... I once again request the Members: Please do not misbehave in the House. Nothing is going on record. You may say whatever you like but nothing is going on record.

श्रीमती कमला सिन्हा (बिहार): महोदया, मैं आपके माध्यम से ...(व्यवधान)...

DR. ABRAR AHMED KHAN: A Point of order, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. Take your seat.

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल (पंजाब): मैडम, मंत्री महोदय जी जवाब दे रहे थे, बिल्कुल ठीक ठाक सभी चल रहा था। उसके पहले सत्यपाल मलिक जी ने ठीक ठाक कह दिया, सब कुछ ठीक चल रहा था। लेकिन मंत्री जी ने कहा कि मैं किसी हद तक रेग्रेट करता हूं। उससे यह शोर हुआ। अगर मंत्री जी क्वालीफाइड रेग्रेट नहीं बल्कि अन-क्वालीफाइड रेग्रेट शो कर दें तो मेरे ख्याल में बात खत्म हो सकती है... (व्यवधान) ... जैसा सत्यपाल मलिक ने कहा है वैसा आप भी कह दें।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Unqualified regret about what? *(Interruptions)* I am not asking you. Sit down. I say, "Sit down." I am not asking you. Take your seat. Behave properly. I am asking the person. Sit down. I say, "you sit down." I am asking one Member. You are not Mr. Hanspal. Everybody gets up like this. What is this nonsense?

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: आप नाराज न हों।

उपसभापति: मैं नाराज नहीं हूं।

You come and sit here and see how you run this House.

आप बैठ जाइये।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: मंत्री महोदय ने कहा कि हमें खेद है कि अगर मुस्लिम शब्द यूज करने से आपको कोई तकलीफ हुई, लेकिन मैं किसी हद तक इसको रेग्रेट करता हूं। अगर वह कह दें कि मैं रेग्रेट करता हूं तो बात खत्म हो जायेगी। इसमें क्या दिक्कत है। सत्यपाल मलिक जी ने पहले ही कह दिया है।

DR. ABRAR AHMED KHAN: Madam,...

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. I will not allow you. I say, "Take your seat". You are saying many things. Take your seat. Just a minute. Let me settle this matter. You please sit down.

Mr. Minister, just now a Member from the other side said that perhaps when I was not here and another presiding officer was here you said that you regret आप किसी हद तक रेग्रेट करते हैं। अगर आप चाहते हैं रेग्रेट करना किसी बात पर तो आप

You can regret, and the matter gets settled. *(Interruptions)*

It is between the Chair and the Minister. Please don't interfere. Let me settle the matter. Do you want to settle the matter or do you want to let it continue till the day after tomorrow? It is all right. It does not make any difference to me. I sit here day and night. But you want to continue the business of this House. You all are the custodians of this House. There is a certain business which is written. Every Member comes and asks for special mentions. There is the Punjab Resolution. There are so many other important matters. And the Home Minister is to be discussed.

(Interruptions)

Just a minute please. it is not nice to have a running commentary while the Chair is speaking. You are a very senior Member. Please have patience. if you want the matter to be settled, then, let the Minister and myself settle the thing. It is better. Have a cool mind and patience.

Everyone is concerned about the communal situation in the country, from the right side, from the left side and from the front. Everybody is bothered about it. Everybody is concerned about it. If the fight is only on certain words, I think, some agreement can come on that. So, I would ask the Leader of the House to react to it. *(Interruptions)*

SHRI KAMAL MORARKA: Let the Minister concerned speak.

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI M.S. GURUPADASWAMY): Let him speak.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you want, okey, you do it.

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभापति महोदया, मैंने बहुत साफ कहा था कि हमारे कुलीग सत्यपाल मलिक जी ने जो बात कही मैं उस भावना से पूरी तरह से सहमत हूं और उसके बाद भी हमने कहा, कोई कहने की बात रह नहीं गई थी, अगर ईमानदारी हम में ज़रा सी भी हो कि देश में कम्युनल सिचुयेशन से कनसंर्ड हैं तो **(व्यवधान)**

SHRI VISHVJIT P. SINGH: He has not expressed any regret.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: सीधा बोलने में क्या दिक्कत है? **(व्यवधान)**

उपसभापति: आप ज़रा शान्ति से बैठ जाइये। **(व्यवधान)** बैठ जाइये **(व्यवधान)**

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: आपने रिग्रेट किया था उस रिग्रेट को क्वालीफाईड मत कीरिये **(व्यवधान)** रिग्रेट शब्द आपने यूज़ किया है **(व्यवधान)** रिकार्ड देख लीजिये, इस में क्या दिक्कत है **(व्यवधान)** क्वालीफाई मत करिये ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seat. Don't get agitated.

SHRIMATI BIJOYA CHAKRAVARTY (ASSAM): Madam, after the Minister had spoken on the Statement you had announced the next item as Special Mentions. One of the hon. Members stood up to speak. I do not know ...*(Interruptions)* Don't forget that you are hon. Members of the House *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let us not have a law and order situation in the House. Please take your seats. **(व्यवधान)**

अंसारी जी, महिलाओं से झगड़ा नहीं करते **(व्यवधान)** ठंडे दिमाग से **(व्यवधान)**

श्री मुहम्मद अमीन अंसारी: यह चाहे जो कहते चले जाएं और हम खामोश रहें, यह नहीं चलेगा **(व्यवधान)**

उपसभापति: आप बैठ जाइये अब।

SHRI KAMAL MORARKA: Now, here is an MP from Tamil Nadu.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: Tamil Nadu is in India. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please take your place.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: He calls me "from Tamil Nadu." Why should he call like that? This man is unnecessarily trying to communalise... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Thakur, please come on the Chair. I think a professor is needed, because you have been presiding over the whole crisis. Please come. *(Interruptions)* Please don't bother him this time.

[**The Vice-Chairman (Prof. Chandresh P. Thakur)** in the Chair]

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Mr. Vice-Chairman, I have a point of order.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: I want to bring it to the notice of the House... *(Interruptions)*... The Leader of the House can pay attention to my point of order. The Leader of the House also should listen. After all he comes specially for this purpose.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): You please continue.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Mr. Leader will you pay attention? The Point is that the Minister has gone on record to say that...*(Interruptions)*... Everybody has gone. There is no

Minister...*(interruption)*...Are you the Minister? Despite your denouncing Mann they did not make you a Minister? ...*(Interruption)*...The point is this very clearly the Minister has gone on record to say that he is partially regretful, that in future he will be careful of the wording and the Minister for Parliamentary Affairs said that these words should not have been used. So all that is left now for the Government is to gracefully say that this statement stands amended to the extent that "local people living close to the railway station resented the slogans" instead of "some local Muslims". That is what should be done and the order in this House should be restored...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Let me make a request.

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA (Punjab): It is absolutely waste of time.

We are dishonest about the whole thing.

डा० अबरार अहमद खान (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरा पाइंट आफ आर्डर है। माननीय मंत्री महोदय से जब यह "मुस्लिम" वर्ड हटाने के लिए कहा गया तो उन्होंने एक बात कही थी कि फैक्ट इज फैक्ट। इसका मतलब है कि मंत्री महोदय को वहां के सारे फैक्ट पता लग गये हैं। तो वहां उन व्यक्तियों के कुछ नाम होंगे। इसलिए मुस्लिम समुदाय के जगह या मुस्लिम वर्ड की जगह उन व्यक्तियों के नाम रख दिये जाएं।

When he said, "fact is a fact" why they have not named the persons instead of naming the community?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): We have all heard the considerations. All kinds of things have been talked. Tempers are rising high. I think everybody has the same concern that the country should get a secular message from this House. Efforts are being made to resolve the issue. In the meantime, one way to further cool the tempers is to move on to the next agenda and reduce ...*(Interruptions)*...

SOME HON. MEMBERS: No.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: You adjourn the House.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): Let me complete...*(Interruptions)*...

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA: There is nothing genuine at all. They only want to score points. It is disgraceful that we should come down to this level. I am sick and tired of this type of behaviour in the morning and now. I feel ashamed... *(Interruptions)*.... you yourself analyse. What have you achieved except to show to the rest of the world, that for little quibbles, we are wasting the country's money and our own time.

SOME HON. MEMBERS: You adjourn the House.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): What I was submitting, we are not closing the matter. The matter is still on. Until such time...*(Interruptions)*...

DR. NAGEN SAIKIA: We can proceed to the next agenda. The Deputy Chairman has said that the House will take up Special Mentions and she also called the name of an hon. Member.

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA: All they are waiting for is the hollow victory which will give them nothing.

DR. RATNAKAR PANDEY:*

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. CHANDRESH P. THAKUR): It will not be recorded.

आपकी भावनाओं से सारा सदन सहमत है कि ऐसी बातें नहीं होनी चाहिएं जिससे कि हमारा आपस में झगड़ा बढ़े, लेकिन समस्या इस बात की है कि इसको कैसे सुलझाया जाए। मैं यह कहना चाहता हू कि यह मामला अभी खत्म नहीं हुआ है और दोनें साईड के नेता डिसकस कर रहे हैं... **(व्यवधान)**

*Not recorded.

DR. RATNAKAR PANDEY:*

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): क्या सदन चाहता है कि अगला विषय लें जब तक यह मामला डिसकस हो रहा है?

SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR: Let the House be adjourned for fifteen minutes and till then ...*(Interruptions).*

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI SATYA PAL MALIK): No, we don't agree, Sir. The House should not be adjourned. *(Interruptions).*

AN HON'BLE MEMBER: The Problem of Punjab is equally important.

We are very much interested to discuss Punjab.

DR. RATNAKAR PANDEY:*

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ चन्द्रेश पी॰ ठाकुर): यह रेकार्ड पर नहीं जाएगा।

आप सब लोग इस बात से सहमत हैं कि आज के एजेंडे पर जितनी चीजें हैं, सब महत्वपूर्ण हैं और हम लोगों ने इसमें समय लगाया है। मैं नहीं मानता हूं कि यह समय वेस्ट हुआ है क्योंकि अगर सदन इस मामले में बहुत उत्तेजित है, तो उस पर विचारने के लिए सब को धैर्य होना चाहिए।

प्रश्न यह है कि इसका समाधान क्या निकले? समाधान निकालने के लिए दोनों तरफ के जो नेता आपस में विचार कर रहे हैं, इस बीच के समय का कैसे और उपयोग हो, इस संबंध में मैं आपसे अनुरोध यह करना चाहता हूं कि अगर सदन की राय हो, तो हम स्पेशल मेंशन को टेक-अप कर सकते हैं। ... **(व्यवधान)** आप सुन तो लें। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि उस मुद्दे को फिर से नहीं लाया जाए। जैसे ही वह आ जायेंगे, उस बात को हम फिर...**(व्यवधान)** तो ठीक है, सदन के नेता आ गये हैं। अगर यह अपना कुछ विचार करना चाहेंगे, या मंत्री जी इस पर विचार देंगे, तो बात उठाई जाएगी।

हां मंत्री जी, आपके पीछे इतनी ही बात हुई है कि सदस्य चाहते हैं कि इस समस्या का कुछ निराकरण हो और अब आप निराकरण करवाइये।

*Not recorded.

(उपसभापति महोदया पीठासीन हुईं)

उपसभापति: समस्या का निराकरण हो गया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: आपका तो निराकरण हो गया।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, we have a discussion and the Minister is going to make his comment. (*Interruption*). Statement, regret, whatever you may call it.

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभापति जी, हम फिर एक बार से ईमानदारी के साथ सदन की भावनाओं के साथ हैं और जो हमने अपने बयानात दिये हैं, सरकार के, उसमें हमारी कहीं भी यह नीयत नहीं थी कि किसी भी समुदाय, किसी समाज, किसी खास तबके के संबंध में हम यह कहें कि उनके द्वारा यह किया गया है।

हमने बहुत साफ शब्दों में कहा था कि स्टेशन पर दो सौ लोग जमा हुए, जिनके द्वारा यह घटना घटी। उसमें कोई समुदाय या किसी धर्म के लोगों के बारे में हमने नहीं कहा है। फिर भी मैं मानता हूं कि एक राजनीतिक कार्यकर्ता होने के नाते, सरकार अगर ईमानदारी से चलानी है और समाज के लिये सरकार चलानी है, तो किसी भी समाज के तबके को या किसी भी सदस्य को इससे तकलीफ पहुंची हो, तो मैं उसके लिए रिग्रेट करता हूं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Chair is very thankful to the Minister. I think, it was his maiden performance in the House which was marathon. I request the Members not to bother him so much when he comes for the next statement. Otherwise, I am sure, he will never come to Rajya Sabha. He will remain in the other House. We want him sometimes to visit us.

SHRI. P. SHIV SHANKER: Madam, we on our part, very much appreciate the statement of the Minister. It was none of our intention that we must corner the Government in any form. But since it hurt the feelings of a particular section of the society in this country, we had to take up the cause because this is not a good precedent. It is only because of that

there had been a little trial at our end to see that our feelings are expressed.

PROF. CHANDRESH P. THAKUR (Bihar): Madam, I would like to associate with the sentiments made by the Leader of the Opposition and I particularly like to mention the helpful contribution of the Minister for Parliamentary Affairs and the Leader of the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Chair is thankful to the Members and the Government and everybody for their cooperation.

Now, can we go ahead with the special mentions? Or shall we go ahead with the Punjab Proclamation because that is timebound?

SOME HON. MEMBERS: Punjab.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If the House so agrees, we will take up Punjab. Please let him peacefully make his speech.

STATUTORY RESOLUTION ON PRESIDENT'S PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 IN RELATION TO PUNJAB

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI SUBODH KANT SAHAY): Madam, I beg to move the following Resolution:

> "That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 11th May, 1987, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Punjab, for a further period of six months with effect from the 11th May, 1990."

As the House is aware, in view of the then prevailing situation in Punjab, Proclamation under Article 356 of the Constitution, in relation to the State of Punjab, was issued on May 11, 1987 on the recommendation of the Governor. The Proclamation was approved by the Lok Sabha as well as the Rajya Sabha on 12.5.1987. The Legislative Assembly of the State, which was initially kept under suspended animation, was dissolved on 6th March, 1988, on the recommendation of the Governor.

As the law and order situation in the State continued to be disturbed, approval of both the Houses of Parliament was obtained for continuance of President's rule after every six-monthly period with effect from 11.11.1987, 11.5.1988, 11.11.1988, 11.5.1989 and 11.11.1989. The current spell of President's rule in Punjab is due to expire on 10.5.1990.

The Governor of Punjab, in his recent report to the President, has stated that at an all-party meeting convened by him at Chandigarh in the middle of March, 1990, the view taken was that congenial conditions should be created first before holding elections to the State Legislative Assembly. The Governor shares their views. He is also of the opinion that efforts must be made to mobilise public opinion to bring normalcy in the State. Once these matters are attended to, the State can go for elections in a more harmonious atmosphere conducive to free and fair elections. The Governor has accordingly recommended extension of President's rule in Punjab by bringing in necessary amendments to the Constitution. Accordingly, clauses (4) and (5) of Article 356 of the Constitution have been amended by the Constitution (Sixty-fourth Amendment) Act, 1990. With this enactment, President's Proclamation in relation to the State of Punjab can now be extended for a total period of three years and six months, that is, for a further period of six months with effect from 11.5.1990.

Keeping in view the situation prevailing in the State and taking all the relevant factors into consideration, it is proposed that President's rule in Punjab may be continued for a further period of six months with effect from 11.5.1990.

In view of the position explained by